

अलगोजो

(राजस्थानी कविताओं का मकलन)

सपादक

श्री श्रीमत्त कुमार व्यास

प्रकाशक

नवयुग ग्रंथ कुटीर

धीकानेर

मूल्य २)

पद्मला संस्करण

मुद्रक

जोगरजद सप्तश्लोका
एच.व्ही.एन. प्रेम, बी.बी.ए.

अभिनन्दन

राजस्थानी भाषा का काव्यभंडार अगणित रत्नों से पूर्ण है। और यह अद्भुत सचाइ है कि आग की लपटों से प्रज्वलित, फूलों के रस से मधुमय, भक्ति की मन्दाकिनी से पावन और जीवन की ज्योति से जगमग उस मध्यकालीन काव्यधारा की विरासत आज के राजस्थानी कवि हृदय ने सजो कर रक्ती है। उसने अपने आपको उस महान निधि का उपयुक्त सरसक सिद्ध कर पाठक की धारणा को पूरी तरह बदल दिया तथा राजस्थानी भाषा के पूर्व गौरव को स्थापित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है। श्री व्यास ने इस 'अलगोजो' द्वारा आज के इन अजसवी कवियों को जगता तक पहुँचाने का स्तुत्य प्रयास किया है। काव्य उपवन से जिन फूलों का चयन इन ग्रंथ में किया गया है वे अपनी सुरभि से पहले ही दिग्दिगत को सुवासित कर रहे हैं पर हार के रूप में उन्हें गूँथने का श्रेय श्री व्यास को ही है। इसके लिए वे निश्चय ही यथाई के पात्र हैं।

—शभूदयाल सकसेना

आधुनिक राजस्थानी कविता

राजस्थानी भाषा की प्राचीन कविता एवं लोक साहित्य के विषय में भारत के प्रसिद्ध विद्वानों एवं नेताओं की सर्वदा उच्चतम मान्यताएँ रही हैं चाहे वह प्रकाशित हों या अप्रकाशित। इस विश्व रत्न किन्तु स्वतः स्फूर्त, अनियमित किन्तु ओजस्वी तथा अनेक रूपमय किन्तु रस परिपूर्ण साहित्य की कढ़ियाँ जिसने भी कहीं सुनीं या पढ़ीं वह उसकी श्लाघनीयता को स्वीकारे बिना नहीं रह सका उसकी जिह्वा से सराहना के दो शब्द निकले बिना नहीं रह सके। किन्तु कई कारणों से हमारे जैसे साहित्य का सृजन बन्द हो गया। अतः उसपर प्रहरा डालने की आवश्यकता महसूस नहीं करते हुए आधुनिक कविता की सुविधा के लिए निम्न भागों में विभक्त कर देना उचित समझता हूँ। यह विभाजन मैंने कविताओं के ही आधार पर किया है।

- १ प्रचारात्मक कविताएँ
- २ कथामयी कविताएँ
- ३ प्रगतिशील कविताएँ

आधुनिक राजस्थानी में कविता की यह त्रिवेणी शान के साथ कल्लोल करती हुई प्रवाहित हो रही है। इस त्रिवेणी की प्रथम धारा प्रचारमयी है जिसके प्रणेता श्री माणस्यलाल वर्मा हैं। श्री वर्मा राजस्थान के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय कान्ठेसी नेता हैं। अगरेजी हकूमत में राजाशाही के जुल्मों से रौंदे

हुए किसान एवं मजदूर वर्गों में अपनी कविताएँ सुना-सुना कर
श्रेक-चेतना भरने का प्रयास इन्होंने इस तरह किया

“उठ भठ भणबो ले सील कमाई थारी थारै बच जावै,
। तू फात रेंटियो कपड़ो कर ले पैसो घर में बच पावै,
कर गात्र गाव री जात जात री एकठ फेर समल जा तू
यू ज्वाट, कुम्हार, चमार सभी भाई रो भाई बण जा तू ” ।

इधर श्रेक-तरफ-मेगाड़ में श्री घर्मा ने जिस दुइन में प्रचार
किया उसी दुइन में मारवाड़ में लोकनायक जयनारायण व्यास
ने अपनी राजस्थानी कविताओं द्वारा सोयी हुई चेतना को
जाग्रत किया। दुसरा है कि इस समझ के लिए उनकी श्रेक भी
कविता हमें प्राप्त नहीं हो सकी। श्री व्यास के साथ श्री गणेश
लाल व्यास 'उस्ताद' ने भी अपनी कलम से मारवाड़ की राष्ट्रीयता
जगाने में सहायता दी। “सुलक नै मोट्यारा माथा देणा पड़मी”
कविता का जनता पर अच्छा असर पड़ा। आज तो उस्ताद
ने नई दिशा ग्रहण करली है। राष्ट्रीय नेताओं पर पूजापतियों
को हावी समझ कर उसकी कलम कठोर सत्य का सृजन कर
रही है।

“समझणा री खल सङगी धीरता बेमार पड़गी

लीडरां री लायकी में बाणिया री बास नङगी।”

साम्यवाद का पक्का हिमायती 'उस्ताद' सरकारी शृंखलाओं
में आवद्ध होते हुए आज तो कहता है कि अब हजूरों की बात
धीत चली है।

“इण धरती री धणियाप खरी हाली री कुजवाड़ी है माली री
धर्या-सपत सेन मजूर री अब बीती बात हजूर री”

इधर सिरोही में श्री गोबुल भाई भट्ट ने अपनी राजस्थानी कविताओं
द्वारा सोयी को उठाया [समझ के लिए कविता प्राप्त नहीं हो सकी]

तो उधर जयपुर में श्री हीरालाल शास्त्री ने । आज तो श्रीशास्त्री ही ऐसे कहे जा सकते हैं जिन्होंने राज्यलक्ष्मी के दमघुटाऊ घाताकरण से मुक्ति पाकर प्रेम के साथ मा सरस्वती के चरणों में राजस्थानी कविता कुसुम चढाए हैं । अपनी कविताओं में वे आज भी वैसे ही प्रचारक हैं । ऐसा मालूम होता है कि मानो अब उनमें निस्पृहता आ गई है । 'फक्कड़ भाव' उनकी ऐसी ही कविता है ।

“दुनियाँ का मामूली बाधा फक्कड़ भाव लोप,
सत सूँ धूणी तपै सनातन जमै चीमटो राप ।
लाग लपेट बरा नहीं राखै चालै सदा सट
साचो फक्कड़ बणवा सू ही वेसक होवै टट्ट ।”

इस प्रकार आधुनिक कविता की एक धारा ऐसी चली कि सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना लाने के लिए श्री माणक्य लाल वर्मा द्वारा चलाई गई परम्परा का सारे राजस्थान में अनुसरण हुआ । किंतु काव्यत्व के दृष्टिकोण से श्री वर्मा इन सब में आगे रहे । उनकी प्रचार कविताएँ जितनी जानदार एवं शानदार होती थी वैसे किसी की भी नहीं हुईं ।

इस त्रिवेणी की दूसरी धारा कयामबी है जिसके प्रवर्तक श्री मेघराज वर्मा मुकुल हैं । श्री मुकुल आधुनिक राजस्थानी कविता की सजीव धारणी हैं । इनकी सर्व प्रथम राजस्थानी कविता 'सैनाणी' में मेवाड़ के वीर सरदार घूड़ावत की कहानी है । 'सैनाणी' लिख कर लहा एक तरफ मुकुल ने राजस्थानी कविता को प्रेरणा दी है वहा छसे गाकर राजस्थानियों के हृदयों में तो अपनी भावमापा के प्रति ममत्व पैदा किया ही है साथ ही अन्य प्रांत के नागरिकों का ध्यान भी राजस्थानी की विशेषताओं की तरफ आकृष्ट किया है । श्रीरूईयालाल सेठिया की प्रसिद्ध रचना "पातल और पीथल" पूर्व भी कच्योश की रचनाएँ भी इसी कक्षा में लिखी गई कया

मयी कविताएँ हैं ।

राजस्थान में प्रकृति काव्य लिखने का उदघाटन श्री कन्हैयालाल सेठिया ने किया । श्री सेठिया की रचना 'खेजड़लो' बहुत ही सजीव रचना है ।

“शरै मुरधर रो है साचो मुख दुख साथी खेजड़लो
तिहा मरे पण छिया करे है करकी छाती खेजड़लो ।
आँख पीकर जीणो सीख्यो एक जगत में रोजड़लो
सै मिट जासी श्रमर रवैलो एक जगत में खेजड़लो ।”

श्री सेठिया की इस कलास में बैठकर श्री चन्द्रसिंह ने 'बादली' तथा श्री नानूराम सस्कर्ता ने "कलायण" नाम की रचनाएँ लिखीं जो स्वतंत्र रूप से प्रकाशित भी हो चुकी हैं । बादली प्रकृति काव्य की एक अच्छी रचना है । कु० कानसिंह भाटी की रचनाएँ भी इसी श्रेणी में आती हैं ।

इस त्रिवेणी की तीसरी धारा प्रगतिशील है जिसके नेता साथी रेंवतदान चारण 'कल्पित' है । श्री रेंवतदान ने राजस्थानी कविता को बहुत २ आगे बढ़ा दिया है । उसने भाषा को जो प्रवाह दिया है वैसा सिवाय श्री सेठिया, एव श्री चन्द्रसिंह के अन्य कोई नहीं दे सका । राजस्थानी का यह दिनकर कविता में जो उजास भर रहा है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है । स्व० मनुज देपावत, श्री भारती भूषण श्री त्रिलोक शर्मा एव श्री भीम पाडिया आदि इसी श्रेणी के कवि हैं । श्री रेंवतदान की कल्पना सजीव, सूक्ष्म बूझ अनूठी एव उक्ति वैचित्र्य अद्वितीय है । गांधीजी की हत्या पर उसने जो कविता लिखी उस 'सासो' में इन तीनों धारों का समिश्रण देखिए —

'हुती जे फूल री मन में करल नै तोड़ लेयो हो
हुती जे रूप री मन में पूनम रो चाद लेयो हो
हुती जे जीत री मन में सरब नै माग लेयो हो

हुती जे मिनल री मन में तो कोई भूप लेयो हो ।'

इसके अतिरिक्त राजस्थानी में अनुवाद भी हुए हैं जिनमें कवियों को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। श्री अमर [देवारत ने उमर खैय्याम की रूबाइयों का सरस अनुवाद किया है तथा श्री कु० नारायणसिंह ने कालीदास की अमर शृङ्गार कृति 'मेघदूत' का। दोनों ही अनुवादों के नमूने सग्रह में दिए गए हैं। इनको देखकर आप कवियों की सफलता का अफस कर सकते हैं। इधर श्री गजानन प्रसाद वर्मा ने नए लोकगीत लिखकर प्राचीन परंपरा को नए तरीके से जिन्दा करने का सफल प्रयास किया है।

इस तरह राजस्थानी कविता बहुत ही शीघ्रता के साथ प्रवाह मान हो रही है। कविता का भाविष्य उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। कुछ इन्ने गिने कवियों को पाकर भी राजस्थानी कविता अपना मार्ग प्रशस्त करने में सलग्न है।

इस कविता सग्रह में हम राजस्थान के सारे कवियों की रचनाएँ नहीं दे पाए हैं। सग्रह में ऐसे बहुत से कवि रह गए हैं जो प्रयत्न करने पर भी नहीं आ सके परन्तु उनकी रचनाएँ उत्कृष्ट कोटि की हैं। जैसे श्री गणपति स्वामी, श्री मनोहर शर्मा, श्री भरत व्यास, श्री सुबोध कुमार अप्रयाल, श्री महालचंद बोधरा, श्री चन्द्रसिंह, आचार्य रामनिवास हारित, श्री लक्ष्मीदत्त वारहठ, श्री अद्भुत शास्त्री आदि आदि। अबसर मिलने पर एफ अन्य सग्रह अश्लिष्ट कवियों की रचनाओं का प्रकाशित करने की मेरी उत्कट अभिलाषा है।

इस सग्रह में जिस क्रम से कवियों की रचनाएँ दी गई हैं उनका न तो कोई स्थान निश्चित किया गया है और न कोई कविताओं के स्टैंडर्ड का हो मानदंड माना गया है। मैंने अपनी सुविधा के अनुसार ही ऐसा क्रम रस दिया है।

समय पर प्रूफ नहीं देखने के कारण यत्र तत्र प्रूफ की अशु-
द्विष्ट अवश्य रह गई हैं किन्तु आगामी संस्करण में वे अवश्य
सुधार दी जायेंगी

समग्र में मैंने राजस्थान के सभी डिविजनों की रचनाएँ देनी
चाही थी किन्तु कई जगह से रचनाएँ प्राप्त नहीं होने के कारण
मेरा मनोरथ पूरा नहीं हो सका। भविष्य में उसे पूरा करने का
प्रयत्न किया जायगा।

यहाँ मैं अपने गुरुवर प० अक्षयचन्द शर्मा का आभारी हूँ कि
जिनकी महत् प्रेरणा से यह राजस्थानी कविता का प्रथम समग्र
आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। साथ ही समग्र के सभी
कवियों एवं एजुकेशनल प्रेस के व्यवस्थापक कु० शेखरचन्द
सकसेना का कि जिनके सहयोग से समग्रहित होकर यह रचना
प्रकाशित हो सकी।

राजस्थानी रचनाओं का यह प्रथम समग्र 'अलगोजो' में इस
दृढ़ विश्वास के साथ आपकी सौंप रहा हूँ कि आप निश्चित रूप
से राजस्थानी भाषा को ओर आकृष्ट होंगे तथा इसकी सुरीली
आवाज सारे भारतवर्ष में गुंजा देंगे।

व्यास कुटीर
लाहौर [राजस्थान]
३ दिसम्बर १९५३

श्रीमत् कुमार व्यास
मंत्री
राजस्थानी साहित्य सम्मेलन
वीरानेर

विषय-सूची

- | | |
|--|----------|
| १ प्रो० मुकल एम ए
सैनाथी, कोटमदे, लोरी | १ से १५ |
| २ श्री कन्हैयालाल सेठिया
पातल और पीथल, बापू, खेजड़लो | १६ से २४ |
| ३ श्री रैवतदान चारण 'कल्पित'
इन्किलाब री थांधी, सासो, महालिछमी | २५ से ३१ |
| ४ श्री मनुज देपायत
रे धोरा आला देश जाग, जद झुमै शीश | ३२ से ३६ |
| ५ श्री प्रेमचन्द रायल "निरकुश"
मजदूरण री भोलायण, घसियारी | ३८ से ४१ |
| ६ श्री माणस्यलाल घर्मा
निसान | ४२ से ४५ |
| ७ श्री गणेशलाल व्यास "उस्ताद"
धीती बात हजुरा री, जाग रणवका सिपाइ,
पिण आगै आगै हालो | ४६ से ५३ |
| ८ श्री अमर देपायत
मस्ती रो सदेश | ५४ से ५७ |
| ९ श्री भीम पाडिया
दिवलै री जोत | ५८ से ६१ |
| १० श्री हीरालाल शास्त्री
पुराणी पू जो, चराम सुणपयो, ललकार
करन्द भार | ६२ से ६६ |
| ११ श्रीमती राजलक्ष्मी 'साधना'
जिग रच्यो राजनी, गीत, गीत | ७० से ७४ |
| १२ श्री जगमोहनदास मू धड़ा
गीत | ७५ से ७८ |

- १३ कुंजर कानसिंह भाटी ७६ से ८५
 अमरेज गया पण 'अमरेजी तो रहगी,
 चौमासो, मियालो, कनालो, पीढत, ठापर,
 साहूकार
- १४ श्री गजानन प्रसाद वर्मा ८६ से ९१
 परमातै रो गीत, चौमासै रो गीत
 माण्य भादवै रो गीत
- १५ श्री सूर्यशरर पारीक 'भारती भूषण'
 बे भर भर क्या नै थोढे, उडीका
- १६ श्री नानूराम सस्कर्ता ९७ से १०१
 बलना री वाग, दीन किमान
- १७ श्री त्रिलोचन जर्मा १०२ से १०६
 ऊगतो सूरज, चेतो कर कर चाल जवानी
- १८ श्री नारायण सिंह भाटी १०७ से १११
 मेघदूत
- १९ श्री रतनलाल दाधीच ११२ से ११६
 छा नैणा री, सीधो सीधो चाल,
 माजन गोल
- २० श्री श्रीमन्त कुमार व्यास ११७ से १२७
 रागी, गीत, घोल्यु दी, चक्रो चक्री,
 इन्विलाच तो आमी रे
- २१ श्री मन्हेयालाल सेठिया छि १२७ से १२८
 टमरक टू, अन्नगोजो

ए-ये रचनाए बाद में प्राप्त शन से इनकी परली रचनाओं के साथ
 नहीं जा सकी ।

... १७ ... १८ ... १९ ... २० ... २१ ... २२ ... २३ ... २४ ... २५ ... २६ ... २७ ... २८ ... २९ ... ३० ... ३१ ... ३२ ... ३३ ... ३४ ... ३५ ... ३६ ... ३७ ... ३८ ... ३९ ... ४० ... ४१ ... ४२ ... ४३ ... ४४ ... ४५ ... ४६ ... ४७ ... ४८ ... ४९ ... ५० ... ५१ ... ५२ ... ५३ ... ५४ ... ५५ ... ५६ ... ५७ ... ५८ ... ५९ ... ६० ... ६१ ... ६२ ... ६३ ... ६४ ... ६५ ... ६६ ... ६७ ... ६८ ... ६९ ... ७० ... ७१ ... ७२ ... ७३ ... ७४ ... ७५ ... ७६ ... ७७ ... ७८ ... ७९ ... ८० ... ८१ ... ८२ ... ८३ ... ८४ ... ८५ ... ८६ ... ८७ ... ८८ ... ८९ ... ९० ... ९१ ... ९२ ... ९३ ... ९४ ... ९५ ... ९६ ... ९७ ... ९८ ... ९९ ... १०० ...

१. अरमाण सुहाग रात रा ले, रजपूतण मैला में आई,
 २. ठमके सें ठुमके ठुमके छम छम, चढगी मैला में शरमाई,
 ३. पण बाज रयी थो शहनाई, मैला में गूज्यो शरनाद,
 ४. अघरी पर अघर धरया रहग्या, सरदार भूलग्यो आलिगण,

[परिचय—प्रो० मुकुल राजस्थान रा बें अमर कवि है जिण हि
 स्तान रें हरेके प्राप्त में आपरी कवितावा द्वारा राजस्थानी भाषा रो माथो ऊ
 उढायो है । मुकुलजी री भारत-व्यापी लोकप्रियता रो कारण ही इणा र
 राजस्थानी कविता 'सैनाणी' है । जिणरी तारीफ न खाली राजस्थान
 रा नेता ही नल्क भारत रा प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू
 समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण भी टेम टेम माथे करी है ।

श्री मैथिलीशरण गुप्त री 'भारत भारती' नै स्व० सुमद्राजी चौहान
 'झांसी वाली रानी' री तरियां इणारी 'सैनाणी' रो भी भारत री जनता द्वा
 मुकूलो, स्वागत होयो- है । सावा, री, ताम्मीरता, भाषा री मधुरता
 कल्पना री स्वाभाविकता, व्यक्तित्व रो आकर्षण नै शैली रो नाटकीय ढ
 इण सगली बातों रो मेल मुकुलजी में मिलै है । इणा- सातर मुकुल
 प्रसिद्धि में हिन्दी रें किणी भी चोटी रें कवि स लारें नहीं रें सकिया ।

'सैनाणी' रो कवि आजकाल खाली पुराणी परन्परा रा गीत ही नह
 लिख रयो है बल्कि जजीवण नै आगे बढ़ाए आज साहित्य निर्माण
 मिलम रयो है । शास्त्र में मुकुलजी जनता रा कवि हैं नै लोकगायक है । राज-
 स्थानी साहित्य नै उणा स आगे मोकली मोकली आसावा है ।]

सैनाणी

सैनाण पड्यो हथले वै रो
हिंगलू माथै पर दमकै ही,
रखड़ी फेरारी आण लिया
गमगमाट करती गमकै ही,
कांगण डोरो पुच्या माही
चुड़लो सुहाग ले सुघडाई,
मँदी रो रग न छूट्यो हो
था बध्या रखा विछिया थाई,
अरमाण सुहाग रात रा ले
रजपूतण मैला में आई,
ठमकै सू ठुमक ठुमक छम छम
चढगी मैला में शरमाई,
पोढण री अमर लिया आसा
प्यासा नैणा में लिया हेत,
चू डावत गठजोडो खोल्यो
तन-मनरी सुघ बुध अमित मेट,
पण बाज रयी थी शहनाई
मैला में गूड्यो शखनाद,
अघरा पर अघर धरथा रहग्या
सरदार भूलग्यो आलिगण,

रजपूती मूँ पीलो पढ़गयो
 बोल्यो रण मे नहीं जाऊँला,
 राणा थारी पलका सहला
 मैं गीत हेतरा गाऊँला,
 आ बात उचित किय हृद ताई
 ब्या' मे भी चैन न ले पाऊँ,
 मेवाह भलैई क्यू हो न दास
 मैं रण में लडण नहीं जाऊँ,

बोली रजपूतण नाथ आज थे
 मती पधारो रण माही,
 तलवार बताघो में जासू
 थे चूडी पेर गयो घर माही,

कठ कूद पडी भट सेज रगग
 नैणा सू अगना भभक उठी,
 चडी रो रूप बस्यो द्विण मे
 विकराल भवानी घमक उठी,

बोली आ बात जचै कानी
 पात नै चाहूँ में मरवाणो,
 पात म्हारो कोमल कू पल सो
 पूला सो द्विण मे मुरभाणो,

पेला तो समझ नहीं आई
 पागल सो बैठगो रह्यो मूर्ख,
 पण बात समझ मे चद अ ई
 हो गया नैण गन्दम सूरज,

बिजली सी कड़की नस नस में
 धाध्या कवच उतरयो पोठी,
 हुंफार बम्म बम्म महादेव
 ठक् ठक् ठक् ठक् बढी घोडी,

पेला राणी ने हरस हुयो
 पण फेर जान सी निकल गई,
 काल जो मुँह कानी आयो
 डब डब आगडिया पथर गई,

घायल सी भागी मैला में
 तिर बाच भरोला टिक्या नैण,
 बारें दरवाजै चू डावत
 रच्छा रयो थो वीर धैण,

नैणा सू नैण मिला द्धिण में
 सरदार चीरता बिसराई,
 सनक नै भेज रावल में
 अ तिम सैनाणी मगवाई;

सेवक पहुचयो अ तपुर में
 राणी सू मागी सैनाणी,
 राणी सहमी फिर गर्ज उठी
 बोली-कह दे मरगी राणी,
 फिर कह्यो-ठैर लै सैनाणी
 कह भपट रडग खीच्यो भारी,
 तिर कट्यो हाथ में उझल पड्यो
 सेवक भाग्यो लै सैनाणी,

सरदार चढ़लियो घोड़ी पर
बोटयो-र्या ल्या ल्या सैनाणी,
जद कटयो सीस दख्यो हसतो
घोल्यो राणी म्हारी राणी,

ये शुभ सैनाणी दी राणी
है धन्य धन्य तू छत्राणी,
मैं भूल चुक्यो थो रण पथ नै
तू भलो पाठ दीनो राणी,

कह एह लगाई घोड़ी रै
रण बीच भयकर ह्यो नाद,
केहरि उठ्यो चिंघाड़ मार
अरिदल रै माथै पडी गान,

सरदार विजय पाई रण में
सारी जगती बोली जै हो,
रणदेवी री, मनदेवी री
मा भारत री जै हो जै हो,

१५. कोडमदे के फल
 फल लक्ष्मी के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

कोडमदे के फल

कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल
 कोडमदे के फल

दल बादल समडयो हेत्या रो
 लसकर धाम्यो भी यमै नहीं,
 कररी रा मैदी रगराता
 डगमग पग डिगता जमै नहीं,

धीमै धीमै हलवा हलवा
 सपना रो दिबलो सजोया,
 चाली कोडमदे नैण भरया
 दुमिघा में अपणी सुध खोया,

सादूल बाध मीठा सपना
 उजली रजणी नै याद करै,
 साथ्या रो साथ कदै लेवै
 पुणि कदै लारनै कदम धरै,

सोत्या बिचली माणक लाइल सी
 लाल काढ यो कुण जावै,
 कुण वूमै गौरी रै मन री
 बीजो माणस यू क्यू भावै,
 ममता री तणिया सी खीचै
 भीजै पलना होवै गल गल,
 सिरखै, हिरखै, धिरकै मन में
 चलकै गठ बधण में पल पल,

बावल रो हियो भरथो आयो
 नैया में समदर सा उमड़यो,
 काले हूगर री घरती पर
 कुण बिरह बादली ले घुमड्यो,
 घर नै सुनो सुनो छोड्या
 पारया पसार चिडकोली जा,
 पुणि आएँ री आसा बिसार
 मुय मोड्या या कुण जा कुण जा

ओल्यु रा सुर धीमा पड़्या
 डोली पूरष कानी चाली,
 मिभया कुमुटिया मे लुक छुप
 ल्याई दुन री, रजनी काली,

दो नैण लान सू भाज रया
 दो रूप वृपा सू रीफ रया,
 दोया रा सपना जाग रया
 इक दूजै पर दोऊँ रीफ रया,

डगमग डगमग डोलै डोली
 हलवा हलवा चालै डोली,
 दोन्या रै हियडै हूक चठै
 पण दोऊ मुख निकलै ना डोली,

ब्यू होठ हिलै त्यू सास बली
 पुणि हाय बडै धड़के छाती,
 सभायै री है बात निसी
 जइ इक दूजै रा म्हे साथी,

सूनै मारग पर चाद ऊग
रजणी रो अविचारो धोवै,
डोली आगै दायें बायें
सादूल साधिया नै जोवै,

ब्यू चाद चादणी लिया साथ
नभ रै तारा मे राव रयो,
रणगीर लिया कोडमदे नै
साध्या मे वैसो साज रयो,

इतणै मे सूनै मारग पर
ठक्ठक् टक् टाप सुएया भारी,
आरया रा डोरा लाल करया
रतनारा नैण तएया भारी,

नस नस मे खून जन्यो पिघल्यो
कडकी निजली धडकी छाती,
कड कड कड करती टूट पडी
अरडक री सेना मदमाती,

लप लप करती तलमार थाम
सादूल खडयो थो सावधान,
रण बाला रुमर कस्या निकली
सब छोड लाज लै एक प्राण,

सुण शखनाद गज चिघाड्या
हय हीस्या, म्याना मिची खग,
तडपी विजली सी नस नस में
छेड़यो वका विकराल जग,

बण मढाकाल भिङ्ग्या भैरव
गरज्या आपन मं ठोक ताल,
भाला सू गीची गाल गाल
तीरा सू धीग्या बाल बाल,

लोडू सुदाण बनती कृपाण
पमकंला छाटा लाल लाल
मदमत्त धीरा घर रुद्र रू
डाटी तलपारा अडा डाल,

अमरार पङ्ग्या न्या न्या पङ्गाङ्
ली भट भयानी रूड माल,
गट शीरा फट्यो आई भु बाल
धड पढ्यो घरा पर या उद्याल,

याल गाज्यो, अ घर काप्यो
फिर एक धार हुकार उठी,
घर और घघू रै हाथा में
प्रलयकारी तलवार उठी,

खुल दूर पङ्ग्यो कागण होरो
बहग्यो सिदूर पसीने में,
मदी रो हाथ फटारी लै
चलग्यो फितणा रै सीने में,

सादूल और अरडक दो-यू
लड लड के थक थक हुया चूर,
दोन्यू ही फुलरी लिया आण
रण में थाका मदमत्त सूर।

इतणै में धिजली कड़क पडी
 बस आग्न रूपी तलवार चली,
 मादूल ह्यो दो दूर शीश
 जा पड़्यो दूर, फौजा मचली,

लुट गयो सुहाग रण देगी रो
 पण एक नहीं आसू ढलक्यो,
 गमगमाट करतो मुख सुदर
 वपु भोर हुई त्यू त्यू भलक्यो,

ले शीश गोद में चिता सजा
 जा बैठी शिव हर हर करती,
 बलि रग रौचली हाथ बढा
 चूचकारी बार बार धरती,

शोला-बाजल हो दान करयो
 पति नै यो हाथ हाथ में लै,
 पण पिया जा बस्यो दूर दश
 कै करल्यू हाथ साथ में लै,

सासू ह्योडी पर खडी मड़ी
 मग जोती होसी आग्न लगा
 मेरी मरण घर री राणी
 तू बेगी आज्ञा पाव लगा,

ले हाथ सास रै घर तू जा
 कह खग चलाई एक बार,
 नान्हो सो गोरो हाथ दूर
 जा पड़्यो खून री बही धार,

फिर लाल लाल आग्या केरी
 सैनिक नै योजी चला राग,
 दे पाट हाथ दूरो मेरो
 मत देर करे फ्यू नदयो दग,
 फद गट पट सीधो करयो हाथ
 पण सेयफ नदयो नग माथ,
 पुणि गरजी सैनिक पाट हाथ
 बस राग छठी भट गयो हाथ,
 दग दग दग फरती छूट पडी
 लोही री तुरी लाल लाल,
 यो हाथ भेज गो बापू नै
 कह ज्यो चाई री ल्यो सभाल,
 फिर कट्यै सीस कानी दूरयो
 चु दड़ी में ढक्की घरमाला,
 धक् धक् लपटा में धधक वठी
 भारत री घेटी राण वाला,

दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?

मैं कुणवै में बहू षणी थी
सामु सुगणी भली षणी थी,
पोस्यो, पोयो, पाणी ल्याती
मन न धापतो इतणो ग्याती,
दूधा न्हाती, पूता फलती
दही बिलोती, सुग्य में पलती,

लोरी

आज न वे दिन मिले उधार
सूख गई आचल में धार,
अब सुग्य आगै बधगी पाल
दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?
दूध कटै अब तन मे न्हादै
मरणो सूकै, जिवडो हारै,
अब तक आसा कदै न रोई
पेट बल्यो पण कदै न रोई ?

दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?
मैं कुणवै में बहू षणी थी
सामु सुगणी भली षणी थी,
पोस्यो, पोयो, पाणी ल्याती
मन न धापतो इतणो ग्याती,
दूधा न्हाती, पूता फलती
दही बिलोती, सुग्य में पलती,

आज न वे दिन मिले उधार
सूख गई आचल में धार,
अब सुग्य आगै बधगी पाल
दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?
दूध कटै अब तन मे न्हादै
मरणो सूकै, जिवडो हारै,
अब तक आसा कदै न रोई
पेट बल्यो पण कदै न रोई ?

फाजल, टीकी सदा लगाई
 चुड़लो पैरयो, चौथ मनाई,

घरा पधारया जद भरतार
 सायण सो हमइयो ते प्यार,
 पण अथ चूटै चडै न दाल
 दूधो किर्या पियाऊ ओ लाल ?
 तन्नै किर्या जियाऊ ओ लाल ?

भूम मरू आवइया धूजे
 कोइया कापै पलना सूजे,
 आला और दिनाला जोऊँ
 लाल लिखता में फट रोऊँ ?
 हाड पई, परणावै चीजे
 आवल मे बस लोही सीचै,

हाय गरीबी तू मत हार
 मिनखा री मत पाय चतार,
 दाणा रो तो पइयो काल
 दूधो किर्या पियाऊँ ओ लाल ?
 तन्नै किर्या जियाऊँ ओ लाल ?

में जाणू पति कितो कमावै ?
 दपतर मे अपसर खावै,
 भूचै रो माथो गरणावै
 लिखता लिखता नस तरणावै,
 पिंडली कापै, घर जद आवै
 कड कड़ नली कडकती जावै,

कदै न सीस उठै हे राम ।
 काम करै पण मिलै न दाम,
 मच्यो अ घेरो बाका हाल
 दूधो किया पियाऊँ ओ लाल ?
 तन्नै किया जियाऊँ ओ लाल ?

आज भवर मत घरा पधारो
 जोर नहीं मरती रो म्हारो,
 मन्नै नहीं दुख, मै तो जाऊँ
 धरती ने चेतन कर, जाऊँ,
 अब तो बिजली बेगी पहसी
 मिनरा रा बैरी सै धलसी

पौ फाटी, आयो परभात
 दुखड़ा रो तो कटगी रात,
 येई सम्हालो थारो लाल,
 दूधो किया पियाऊँ ओ लाल ?
 तन्नै किया जियाऊँ ओ लाल ?

१ गङ्गा कुंठितं तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 २ नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 ३ नदी तत्रैव तत्रैव तत्र

नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र
 नदी तत्रैव तत्रैव तत्र

नदी तत्रैव तत्रैव तत्र, मनघार बिना कगता कोनी,
 नदी सोना, रीहयाल्यो, नीलम रा बाजोट बिना धरता कोनी,
 नदी श्रीहाय, कृष्णा, करता पगल्या फूना गी कंबली सेजा पर,
 नदी वैआन, कृष्णा, मुखा तिसिया, हिदवाणे सूरज रा टावर,

नदी तत्रैव तत्रैव तत्र

परिचय—सुजानगढ़ [बीकानेर] की धरती माँ के व्यापारिक परिवार में पैदा होए आलें इए कवि नै घर आला जठे दिन र त वही ग्याता रै जमारचर्च में नल भियो राजगो चावै हा वठे इएनै इएगणो नै कविता बणावती टेम मुलकतो पायो । राजस्थान रा भाग मोटा समभणा चाइजै के पेडो प्रतिभा आलो कवि अठे जलमियो ।

श्री सेठिया की रचनाया में वनचन जैडी भावुनता, महादेवी जैडी कोमलता नै प्रसाद जैडी दाशनिष्ठता रो अपूर्व मेल देखवा मिलै है । हिंदी जगत में ' मेरा युग ' नै ' दीप किरण ' जैडी सुन्दर पोथिया देए आलो ओ कवि राजस्थानी भाषा रो भी समर्थ कवि है ।

भाषा रो प्रवाह नै ओज इणारी कवितावा में विशेष रूप में मौजूद रेते है । श्री सेठिया कोरा कवि ही नहीं बल्कि राजस्थानी रा ओर मात्र गद्य काव्य लिखणिया भी है । इएनै गद्य काव्या की पोथी " पारङ्गल्या " छपवा आली है ।

पातल और पीथल

अरे, पस री रोटी ही षद मन विलावडो ले भाग्यो,
नानो सो अमरयो चील पङ्गयो, राणा री सोधो दुख भाग्यो।

मैं जङ्गयो पण्यो, मैं सङ्गयो पण्यो
मेवाङ्गी मान बचावण्य ने
मैं पाछु १ही राती रण में
वैर्यां रो खूत पदावण्य नै,

अद याद बरु हल्दी घाटी, नैर्यां में रागत उतर आवै,
सुख दुःख रो साथी चेतवङ्गो, एतो सी हूक जगा आवै,

पण्य आज बिलबतो देखू हूँ
जद राजकवर नै रोटी नै,
तो चानधर्म नै भूलू हूँ,
भूलू हिंदवाणी चोटी नै,

मैलां में छापन भोग जका, मनघार बिना करता कोनी,
खोना री याल्या नीलम रा, बाजोट बिगा धरता कोनी,

शै हाथ जका करता पगल्या
फुला री बवली सेजा पर,
मैं आज रल भूला तिविधा
हिंदवाणी सुरज रा दवर

झा सोच हुई दो डूक तङ्क, राणा री भीम मजर छाती,
आख्या में आसू भर चोल्या—मैं लिख सु अकवर नै पाती,
पण्य लिखू किया जद देखे है आकावल कंचो हिया लियां
चित्तीङ्क खड्गो हे मगरा में, निवगल भूतसी लिया द्वियां

मैं मुझ किया ! हे श्राण मने
 बुल रा येसरिया बाना री,
 मैं मुझ किया ! हूँ शेष लिपट
 आजादी रा परगानी री,

पण फेर अमर री सुण बुनकग, राणा रो दिवदो भर श्यायो
 मैं मानू हूँ हे ग्लेच्छ तने सम्राट, सनेसो भिन्नवायो,
 राणा रो कागज बाच ह्यो, 'अकपर रो सपनो सो साचो
 पण नैण'करघा बिसयास नही, 'जद'बाच'बाच नै फिर' बाँच्यो,

के आज दिवालो पिपल दस्यो
 के आज ह्यो सूरज शीतल,
 के आज शेष रो तिर डोल्हो
 यू सोच ह्यो सम्राट विनल

बस दूत इशारो पा भाज्या, पीथल नै तुरत बुलावण नै,
 फिरणां रो पीथल आ पूरयो, 'त्रो साचो भरम मिटावण नै,

उण वीर बाकुड़े पीथल नै
 रजपूती गौरव भारी हो,
 बो ज्ञात्र धर्म रो नेमी हो
 राणा रो प्रेम पुजागी हो,

बैरथा रै मर्न रो चाटो हो, बीबाणो 'पूत रगरो हो,
 राठोइ रखां में रातो हो, दस सागां तेज दुधारो हो,

आ बाँत पातल्या जाणै हा
 घावा पर लूण लगावण नै,
 पीथल नै तुरत बुलायो हो
 'बाण्या री'हार बचावण नै,

म्हे माव लिया हे, पाथल गुण्य, जिजै में जंगली सेर पकड़,
ओ देल हाथ रा कागद हे, तू देला फिरती किया अकड़,

मर हून चल् भर पाणा में
बस भूडा गाल चजावे हो,
पण दूट गया उण राखा रो
तू भाट बणो बिरदावे दो,

में आज पातखा धरती रो, मनाही पाग पगों में हे,
अच बता मने किण रजस्ट रे, रजपूती खून रगों में हे,

बद पीथल कागद ले देली
राखा रो सागी सेनाणी,
नीचे व धरती तिसक गई
आर्या में आयो भर पाणी,

पण फेर कही तन्नाम सभल, आ बात सपा ही भूडी हे,
राखा री पाग सश ऊँची, राखा रा आण्य अदूटी हे,

लो हुकम हुवे तो लिर बूझ
राखा ने कागद रे सार्तर,
ले बूझ भलाइ पीथल व
आ नात सदी नास्थो अकवर,

म्हे आज सुणी हे नाहरियो
स्थाळा रे सागे सेवैला,
म्हे आज सुणी हे सरजदो
बादल री ओटा लावैना,

म्हे आज सुणी हे चातनदो, धरता रो पाणी पोवैला,
म्हे आज सुणी हे हापीदो, बूकर री जूया जावैला,

मैं आज सुणी है थका लसम

अब राह हुवेला रजपूती,

मैं आज सुणी है म्याना में

तरवार रखेना अब सुती,

तो म्हारो हिवडो कापे है, मूड्या री मोड़ मगोड़ गदे,
पथल नै राखा लिख भेजा, आ बात कट्टे तक गिणा सही।

पोथल रा आपर पदता धी, राखा री आख्या लाल हुई,
बिहार मने, हूँ कायर हूँ, नाहर री ओरु दयाल हुई
मैं भूल मरू, मैं प्यास मरू

मेराक घरा आजाद रहे,

मैं घोर उजाहा में भटक पण

मन में माँ री याद रहे,

मैं रजपूतण रा जायो हूँ, रजपूती करज चुकाऊँला,
ओ सीस पट्टे पण पाग नहीं, दिल्ली रो मान झुकाऊँला,

पीथल, के खिमता बादल री, जो रोकै घर-उगाली नै
खिचां री हाथल सह लेवै, ना बूँव मिली कद स्थाली नै,
धरती रो पाणी जिये हसी, चातक री चुच बणी कोनी,
कूर की जूणा जिये हसी, हाथी री बात सुणी कोनी।

आ हाथा में तरवार थका

गुण राह कवे है रजपूती,

म्यानां रै बदले बैरथां रै

सीना में रेवेना सुती,

मेराक धधकतो आगारो, आख्या में चमचम चमपैला,
कड़लै री उठती तानां पर, पग पग पर खोडो खडकेला।

चलो ये मू चढ़पा अँठयेड़ी, लोदी री नदी बहादूला,
 मैं तुरक बहूँला अकबर नै, उजड़था मगाइ बसादूला,
 नद राणा रो संदेश गयो
 पीयल री छाती दूणी ही,
 हिदवाणी सज्ज चमकै हो
 अकबर री दुनिया सूनी हो।

११८

बापू

आभै में उड़ता पग भगम्या, गेलै में बैँता पग ठपम्या,
 हाको सो फूटथा धरता पर, बे कुण गमम्या बे कुण गमम्या ?
 ओ मिनख मरथाक मरथा पाखी
 आ देव मरथोक मरथो साखी,
 बा सिर कूटै हे हिदवाणी
 बा मुर मुर रावै तुरकाणी,
 इसइ कुण सजन सनेही हो, सगला रा हिदवा डगमगम्या,
 हा बवा अटै, बे चिया बटै, परधर सा वरडा बण अमम्या।
 मिनखा रो रुखम्यो मिनख पया
 देवा री मिटगी संवलाई,
 बापूजी सुरग सिधार गया
 हूणी रे आढी के आई,
 बीऊँला सौर दवचास बरस, बिसवास दिगरे वियां ठगम्या,
 गिगितार पहेलो अब देतो, छतधरमी वचना स हिंगम्या।

बापू, सा मिनखा देही . में
 धरती पर मिनल नहीं आया,
 आगे री. पीढ्यां बूमैली
 के इत्या नरतरी धण बाया ?

इय एक जोत रै पलके सू इतिहास सदा नै जगमगल्या,
 इय एक मौत रै मौके पर सगला रा आस रल मिलग्या,

•

खेजड़लो

म्हारे मुरघर रो है सौंचो सुन दुल माधी खेजड़लो
 तिसौं मरे पण छियाँ करे है करड़ी छाती खेजड़लो

आसोजौं य तप्या ताबड़ा
 पाचा लोहा पिलघलग्या,
 पान फूल री बात करों के
 बे तो मद हा जलबलग्या,

मूरज बोल्यो छियाँ न छाड़ पण जवरो है खेजड़लो
 सरणै आय'र छियाँ पड़ी है आप बलै है खेजड़लो

सगला आवे कह कर जावे
 मरू री खारो पाणी है,
 पाणी कशों रो छै तो आँसू
 खेजड़लै ही जाणी है,

आँसू पांकर जीणा सीख्यो श्रेक जगत में खेजड़लो
 छे मिट जासी अमर रेवैलो श्रेक जगत में खेजड़लो

भल्लगोत्रो

, गाँव छौंतिरे, नाग पढ़ाया :
: और सतावे भूख घण्टी,
गाड़ी आलो एामा हॉके
: नारी, याँरो मरे घण्टी,
सिमिया पढ़गी ताग निकल्या पण हे एारो खेजइलो
'आज्या' दे एोएाँ रो भइलो बोल्यो प्यारो खेजइलो

८ लेठ मास में धरता धोली
पूछ पानइो मिलै नही
भूला मरता ऊँट फिरै हे
अे तबलीफा भिलै नही,
इय मौके भी उण ऊँटा ने डील चरावे खेजइलो
अ.ग अंग में पीइ भरी पण पट मयवे खेजइलो

आधी आ अजव अनूठी है हू गर उडग्या सिल उडी नहीं ,
 सिमरथ वे ढहग्या रगमदल हलकी भू पड़िया उड़ी नहीं
 उड़ गयो नमलग्यो हार देरप 'मिणिया री माला पडी अठे
 उड़ गडे चूडिया सोने री लाया रो चुबलो उडे 'कंठे'
 उड़ गया चीर वे मुलमुल रा खादी रे 'रगप नहीं लागी'
 उड़ गयो रेशमी गदरा पण राली रे 'रज' नहीं लागी

रैवतदान चारण "कल्पित"

[परिचय—महाशिव (मारवाड़) के माय जलम लेण

आलो ओ कवि एक दिन राजस्थानी कविता नै नई दिशा देण
आलो कवि बण जायैला, आ कुण जायै हो ? जूने चारण
साहित्य में जकी कड़क ही वा सागी कड़क श्री कल्पित जी की
कवितावा में देखा मिलै है। इया की कवितावा में भूत काल
की भाषा, वर्तमान की समस्यावा नै भविष्य निर्माण की मधुर
भावनावा की छटा पलपलाट करै है।

जदी मुकुनजी की कवितावा में मधुरता नै सेठियाजी की
कविताओं में गभीरता है तो इण की कविताओं में पाचजन्य की
वद्घोष है। कल्पना की महारो लेता थका भी कवि वास्तविकता
की धरती सू उड़ कर उल जलून को बरियोनी। सामयिक
भावनावा नै सपन नै समथ भाषा में गेड़ी जरी है के वे सुणवा नै
पढवा आला नै बोत ही सोवणी लागैला। आ निश्चित रूप सू
कही जा सकै है के एह थानी कविता में क्रांति लायै आलो ओ
कवि जन्मजात कवि जाति की प्रतिनिधि बण कर इया की
काव्य-परंपरा नै अधुण्य राखैला]

इनकिलाब री आंधी

अधर घोर आधी प्रचंड वा धुआधोर धम धम करती
आवे हैं उर में आग लिया गढ़ कोटा बंगला नै दहती
बेताल बत्ती नो नाचै है जिण रै आगे सदेश लिया
राती नै कलीपीली आ कुण जायै कितरा भेष किया

बे शाल बजै सरणाटा रा काई गीत मरण रा गावै है
डकै री चोट करै भोता बायरियो टोल बजावै है
विकराल भवानी रमै भूम धर्ती स अबर तक चढ़ती
अधर घोर आधी प्रचंड *

नीवां रै आगे दबियोड़ी जुग-जुग री माटी दे भूपडो
'हैं उडी किलां नै जङ्गमूल पसवाङ्को फेर लियो पलटो
तिनकै ज्यु उडगी तलवारा घोचै रो रूप कियो भालां
रू खां रै पत्तौं ज्यु उडगी बे लाज बचावण री टालां

वा पड़ी उकरड़ी में बातल मद पीवण रा प्याला उडग्या
मैफिल रा उडग्या ठाट चाट ओदण रा शाल दुशाला उडग्या
बे देख जुगा रा सिहासण रङ्गङ्गता पडिया ठोकर में
बे देर हजार मुकट आज उडताङ्ग दीखै अबर में
बे ऊचा लटकै अधर बच नहीं केलै अबर नै धरती
अधर घोर आधी प्रचंड **

आधी आ अबर अन्ठी है डू गर उडग्या सिल उड़ी नहीं
सिमरथ बे दहग्या रागमहल हल्की भू पडिया उड़ी नहीं
उड़ गयो नवलयो हार देख मिणिया री माला पड़ी छठे
उड़ गई चूड़यां जोनै री लाखां रो बुडलो उड़े कठे

उड़ गया चोर वे मुलमुन रा खादी रे संत नहीं लागी
 उड़ गया रेशमी गदरा पण खली रे नब नहीं लागी
 आ किरै जाटणी लकालूम लखतणी मणी लकयइतो
 अंधार धोर आधी प्रचड ११

अंधकार मत जाण बाला इनकिनाच रो ध्याया है
 इण भाग बदलिया लाखा रा वेइ राजा रक बणायो है
 रे आ वा काली रात जका पूनम रो चाँद ईखावे है
 रे आ वा चाल। भौत जका मुगति रो पथ बतावे है
 रे आ वा भोली हंसो जका के मरती बेल। आवे है
 रे आ नागण काल। जहर जका डाढ़ा में इमरत लावे है
 इण धु आंधार रे आँचल में इक जात जगे है जगमगती
 अंधार धोर आधी प्रचड १२

सांसो

विलैरा आख में आय हिये में पीढ़ संचारी
 बिलखणी रोवणा खत हुइ हैं आज माना रो
 भटकनी, चूमती, फिरती मुसीबत पार कीनी ही
 उमर में हाथ पहली बार ठंडी घास खीनी ही

दियो हो खून बेटा रो कियो हो कालजी ठंडो
 हजारा लाश रे ऊपर लगायो जीत रो भंडो,
 पढ़ी स्वाधीनता मूघो पलटगी आरा हिवका रो
 हुपा दो टुक ऐका के न लागे मिनख स कारी
 हिये में पीढ़ संचारी

धरां स सुरग रै रस्ते हिवाले ले गयो गाधी,
 कदम हा च्यार चाकी के उठी तूफान री आधी,
 धमीडा तीन बाज्या हा सनासन गोलिया छूटी,
 उठी नै देह बा छूटी अठ्ठी नै डागड़ी दूटी,

न कपी क्रोध स धरती न पड़ियो दूट नै अबर,
 धरा पर रह गया बेठा रही मैं डगरा ऊपर,
 कड़क नै मिजली पड़गी हा भड़कगी आग चिंगुगारी,
 हिये म पीड़ सचारी

समझ नै फूल सू कधलो मता क्यू कालजो लीनो ?
 समझ क्यू जोत जगमगती नैण रो चानखो लीनो,
 भरम में मिनख भगवन बता क्यू देवता लीनो,
 सजावण स्वर्ग री शोभा कियो क्यू हिन्द रो घाटो,
 नहीं है कालजो धारे हिये री डीङ है भाटो,
 क्यौ हो छोड़नै लाखा गयो से एक अवतारी,
 हिये में पीड़सचारी

हुता जे पूज री मन में कल नै तोड़ लेखो हो,
 हुती जे रूप री मन में पूनम रो चाद लेखो हो,
 हुती जे जोन री मन में सूरज नै माग लेखो हो,
 हुती जे मिनख री मन में तो कोई भूप लेखो हो,
 अरे इण एक रै बदलै हजारो दान दे देती,
 अगर जे एक रह जातो हिया री पीड़ सह लेती,
 परीक्षा लेख नै भगवन अजे तू देल से म्हारी,
 हिये में पीड़ सचारी,

उड़ गया चोर वे मुलमुज रा खादी रे सख नहीं लागो
 उड़ गया रेयमी गदरा पय राली रे ख नहीं लागी
 आ विरे जाटयो लडालूम लउपतथी मरगी लङ्गयइतो
 अंधार घोर आरी प्रचड

अधकार मत जाण चायला इनकिनान री छाया है
 हय भाग बदलिया लाखा रा केइ राजा रक बणायो है
 रे आ वा काली रात जका पूनम रो चार्द हवावे है
 रे आ वा बाल। मौत जका सुगति रो पथ बतावै है
 रे आ वा भोली हंसो जका के मरतो बेलो आवै है
 रे आ नागय काल। जदर जका डाढ़ा में इमरत लावै है
 इण धु आधोर रे आँचल में इक जात जगे है जगमगती
 अंधार घोर आधी प्रचड

सांसो

विलैण आख में आय हिये में पाइ सचारी
 बिलखणी रोवखा सखत हुइ है आज माता री
 मटकनी, चूमती, फिरती मुषीवत पार कीनी ही
 उमर में हाय पहली बार ठंडी सास लीनी ही

दियो हो खूत बेटा रो कियो हो कालजो ठडो
 इबारा लास रे ऊपर लगायो जीत रो भंडो
 पडी स्वाधीनता मूषी पलटगी आथ दिवड़ा री
 हुया दी इक ऐका के न लागे मिनख स कारो
 हिये में पाइ सचारी

धरो स सुरग रै रस्तै दिवालै ले गयो गाधी,
 - कदम हा च्यार चाकी के उठौ तूफान री, आवी,
 घमीडा तीन बाजरा हा सनाधन गालिया छूटी,
 उठौ नै देह वा छूटी अठौ नै डागङ्गी टूटी,

न कपी क्रोध स धरती न पाङ्गियो टूट नै अचर,
 धर पर रह गथा बेरा रही में डगर ऊपर,
 फडक नै बिजली पड़गो हा भइकगी आग चिंगगारी,
 दियै में पीइ सचारी ।

समझ नै फूल स कवली बता क्यू कालजो लीनो ?
 - समझ क्यू जोत जगमगनी नैण रो चानणो लीनो,
 मरम में मिनल भगवन बता क्यू देवता लीनो,
 सजावण स्वर्ग री शोभा कियो क्यू हिन्द रो घाटो,
 नहीं है कालजो थारै दियै री टोइ है भाटो,
 क्यौ ही छोड़नै लासा गयो ले एक अवतारी,
 दियै में पीइसचारी

हुती जे फूल री मन में करल नै तोइ लेण्यो हो,
 हुती जे रूप री मन में पूनम रो चाद लेण्यो हो,
 हुती जे जोत री मन में सूरज नै माग लेण्यो हो,
 - हुती जे मिनल री मन में तो कोई भूप लेण्यो हो,
 अरे इण एक रै बदलै हजारो दान दे देती,
 अगर जे एक रह जातो दिया री पीइ सह लेती,
 परीदा लेय नै भगवन अजे तू देल ले गहारी,
 दियै में पीइ सचारी,

महालिछमी

सोऽत्रा वा नीर गरीषां च भागीशो यदियो पुमाती वा
 शुद्धी ग एक भगव दे ए निक्षयो दीप बुभती वा
 हल बीगो, सीका राशी गू तिन २ कर कगा छीगो दो
 ऊो बन् बलते तावद्विदे बल पत्ता ऊमा रीगो दो
 कुय नये किरा दुम मेला मर लप ी बीनी रलयली
 बोटा मुदा मे दिा वाट्या पूना जू लिछमी नै पाली
 पय मय टण रदगी गद् पाडा नगयली छिण में छोइ गाय
 बद् पूछूयो कारय न यण रो हस माय वैरण एक सात
 छपमरिया प्राण मती तप्रा यली पर सेज चढाती वा
 ए लिछमी दीप बुभती वा

जे बड़ी विधाना रू ली छिणगार दियो हे मजदूर
 रलही, पाजुद, तिमणियो ग्लहार दियो हे मजदूर
 लोही में बोटी बाट चात्र त्रिण मइदी राय लगाई ही
 पूला जू फरला अबरिया चरणा म भेंट चढाई ही

घरकी चहु बेम्बा बिलारी री पण लिछमी तने सज ई ही
 हफ थारी जोन अगायण नै घर घर री कोत बुभई ही
 पण येन दिय ली रै दिन बैरण सामी छाती पग घरती
 दुमफे सू चटी हवेली में मन मरजी श मटका करती
 जे साज बेचणी तेवइली तो पूरो भोल चुकाती वा
 ए लिछमी दीप बुभती वा,

इतय दिन ठगती रेई हे व भोली यण छल जाती ही
 छाती ही राटा माटी री पण गीत बीरा य गती ही

जे हमै बाण रो नांच लियो तो नीभ डाम दी बाँला
 जे निजर उठी मदला कानी तो आख पोइ दी बाँला
 जे हाथ उठायो हाके नै नागौरी गेयो बइ दाला
 जे पग भर दीना धनिका घर तो पगा पागली फर दाला
 मदला' गढ़ कोटा, बगला रा वे सपना हमै भुलातो बा
 ए लिङ्गमी दीप जुभानी जा,

रे उठो मजूरा, किरमाणा धे उँठा वमत्यो आन जीण,
आ नफाखोर अन्याया नै करयो फोटी रा तीन तीन;
फण किचर कालियै माषा रो तू गाग मिटाने जैर भाग,
छाती पर पैणा पड्या नाग रे धोर आला देश जाग,

परिचय—श्री मनुज देपात्रत इसो ठासवद कलाकार हो चको कविताया लिखतो गयो पण कदेई वानै छापै मे छपायै री मनसा को राखीनी । रणरी कवितावा मे स्वाभाविकता, शय नगाडा री गडगडाहट नै समाजवाद रो सुर है ।

देशनोक (वीकानेर) रे एक मधम वारठ परिवार में जलम लेण आलो ओ कवि जद सार्दे जियो तूफाना सू थापा मुक्की करतो जियो । जिन्दगानी सू नित नथा सजरु सीख सीख'र ओ जकी जकी कविताया लिखी वे राजस्थानी भाषा री मोरा ब्रणगी । कविताया सुणणिया आ ही कैंता के इणरे कटा में तो सुरसतीजी विराजमान है ।

मनुज साली राजस्थानी भाषा रो ही नहीं हिंदी रो भी चोरो कवि हो । राजस्थानी अ'र हिंदी दोनू भाषाया नै मनुज सू मोकली आशावा ही पण ता १८ मई ५२ का वीकानेर-पलाना रे बीच हुई रेला री भिड त मे इण रो देहाजसान होग्यो जिक सू आशाया अधूरी ही रेगी काश मनुज और जीयतो ।

रे उठो मजूरा, किरमाणा थे ऊँठा कमल्यो आज जीण,
छा नफारयेर अन्याया नै करवो कोटी रा तीन तीन,
फण किवर कालिये सापा रो तू आज मिटानै जैर भाग,
छाती पर पैणा पडथा नाग रे धोर आला देश जाग,

स्व० श्री मनुज देपावत

परिचय—श्री मनुज देपावत इसो ठामवद कलाकार हो जको कवितावा लिग्नतो गयो पण कदेई जानै छापै मे उपाणै री मनसा को राखीनी । एणरी कवितावा मे स्वाभाविकता, शर नगाडा री गडगडाहट नै समाजवाद रो सुर है ।

देशनोक (वीरानेर) रै एक मधम वारठ परिवार में जलम लेण आलो ओ कवि जद ताई जियो तूफाना सू थापा मुकी करतो जियो । जिन्दगानी सू नित तथा सयक सीस सीस'र ओ जकी जकी कवितावा लिखी वे राजस्थानी भाषा री मोरा बणगी । कवितावा सुणणिया आ ही कैंता के इणरे कटा में तो सुरसतीजी विराजमान है ।

मनुज खाली राजस्थानी भाषा रो ही नहीं हिंदी रो भी चोखो कवि हो । राजस्थानी अ'र हिंदी दोनू भाषावा नै मनुज सू मोकली आशावा ही पण ता १८ मई ५२ का वीरानेर-पलाना रै बीच हुई रेला री भिड त में इण रो देहाउसान होग्यो जिक सू आशावा अथुरी ही रेगी काश मनुज और जीयतो ।

रे धोरां आला देश जाग

उठ खोल उणीन्दी आलकल्यां, नेणां री मीठी नींद तोड,
रे रात नहीं अब दिन उगियो, मुपना रो झूठो मोह छोड,
धारी आर्यां में राच रया, जजाल सुराणी रातां रा,
तू कोट बग्यावे उण जनाई जुग री बोरी यातां रा,

पण बीत गयो सो गया बीत, अब उखरी कूडी आस त्याग,
छाती पर पैया पड्या नाग, रे धोरा आला देश जाग ।

रे देर मिनल मुरभय रया मरणै तू मुसकिल है जीणा,
ओ खदी हवेल्या आज हवै पण भू पडिया रो दुग दूणा,
अ धनवाला धारी काया रा भक्तक चरता जावै है,
रे जाग खेत रा रगवाला आ बाढ़ खेत नै खावै है,

ए जका उजाई भू पडिया नै उण महला रे लगा आग,
छाती पर पैया पड्या नाग, र ऊठां आला दश जाग ।

खागा रे लागो आज काट खूटी पर टगिया धनुष तीर,
वे लोग मरे भूना मरता फोगा में चलता फिरै वार,
रे उठो, मजरा, किरसाणा ये ऊठा कसल्या आज जीण,
आ नफाखोर अन्ध्या नै करणा काडी रा तीन तीन,

पण किचर कालियै सापा रो तू आज मिटाटे डैर भाग,
छाती पर पैया पड्या नाग, रे धोरा आला देश जाग ।

रे इनकिलाब रा अगार सिलगावै दिल रां दुखी हाथ,
पण छाटा छिडका नहीं बुझैली डूगर लागी आज लाय,
अब दिन आवैला इक इसो धोरा री धरती धूजैला,
अ सदा पत्यरा रा सेवक अब आज मिनरत रे पूजैला,

हण सदा सुरगे मरुधर रा, सतोटा जागे आज भाग,
छाती पर पैया पड्या नाग, रे धोरा आला देश जाग ।

जद भुके शीश

उण कयर कीट कपूता री कपि कथा सुणावण नै चावै,
अरर री आख्या लाज भरै, धरती लजस्तानी पड जावै,
जद भुके सोस नाचा हई नेण

धरती रो कण कण सरमावै ।

मेरी रो रण में नाच हूवै, मतवाला खागा लणकावै,
मा वसुधरा दित जग छिड़ै वीरां रो जोरा उफण आवै,
अतर री जाला बाग उठै, रग रग में बिजली दौड पड़े,
भनभना उठै मनरी वाणा, अर आख्या स्र अगार भडै,
पण हाट मौत रा मछी देख मतजाला मन में घबरावै,
जीवण रा चिता आन पडै प्राणा रो मोह नहीं जावै,
वे प्राण जका नित महला में मन्दाशी रा गायन गावै
ब प्राण, जग हो सुरामस्त, परिया रा आलिंगण पावै,
वे प्राण, जका राजा बणकर रैयत रै दुकडा पर जीवै,
वे कुस्तवार कयर जग म मरथै रा म्याद नहीं जायै,
माता री छुटती लाज दख, प्राणा म जोश नहीं आवै,
रग रग में राप नहा आवै,

सिधा री भपटा मैलणिया, मिनकी रै डोला डर जावै

जद भुके शीश नीचा हई नेण

धरती रो कण कण सरमावै,

वे राज भवन, रस भोग भवन वैभव विलास म चूर खड्का,
ज्यू मानवता री छाती पर दानव रा निष्ठुर पैर अकथा,
महला में बैठा मौज करै बो राज काज रो रखवारो,
जीवण रा भार लिया दोवै गलिया म रावै दुखियारो,
राटी री माग करै जग म, सीपे पर सहन करै गोली,

पैतीस

ऊँचे महला री छाया म, बा भूला री दुनिया मोली,
 ले पौत्र पुलिस रा बाजीगर, ले साधन मोटर ड्राम रेल,
 आ सड़का री फुटपाथा पर, कर रयो निधाता एक खेल,
 यो रौल जकै में मानयता कठपुतली बण कर नाच उठै,
 ब हाड मास रा बएया पिड, लकड़ी रा घाडा बण जावै,
 सड़कर हटर री मार मिनग मुस्कान बिलेरथा अइया रहै,
 सड़कर लूटै पर राइया रहै, पथ पर पथर ज्यू पढया रहै,
 बटना री इजत लूट दनुज नित अदहास करता जावै,

जद भुके सीस, नीचा हूँ नैण

धरती रो कण कण सरमावै,

ब घिसा व्यवस्था रा प्रेमी, बे शापक सत्ता रा हामी,
 बे लबा तिलक लगावणिया, बे काती रा कुत्ता कामो
 सोनै, चादी रै टुकड़ा पर मानव इजत रा मोल करे
 बिक जाय जवानी हाट हाट तन रा तावै सूतोल करे
 बिक जाय मानवी बिना मोल, हाटा पर लाली दाग लिया,
 ज्यू मरी सभ्यता रै मुग पर अँ लाल मौत रा भग लिया,
 मन बिक जावै, तन बिक जावै, जीनण रा सौरभ लुट जावै,
 पण उण मर भुक्कै मानव री, बा भूल नहीं बुभुक्कै पावै,

जद भुके सीस, नीचा हूँ नैण

धरती रो कण कण सरमावै,

वे एक गात्र रा ठाकरसा घोडां रै चास मगाता हा
 आनो, दो आना देता पण उपर सू रीन जमाता हा
 घोडा रै दाणों ग्याणै वा दाल चिणा री भिजियोडी
 पण इण रा बानर भूसा हा, वा किममत इण सू पिजियोडी
 कुत्ती रा हुचरिया वैठा, जीमै कररा री थाली मे
 पण एक भिनत, रा टावरिया भूसा सूता दीनाली म

श्री प्रेमचन्द रावल "निरंकुश"

परिचय— सरकारी इस्पताल में लिखियोड़ा नुसरा है साथे नीमारा ने दनाया देण आलो ओ कवि सागे सागे मन री दवाई भी दवेला आ छुण जाणै हो ? पण गरीना साथे होण आला जुलमान जद ओ आपरी आख्या सू परतक देखिया तो भलै बोलो वालो निया बठो रेंतो ?

राजस्थानी भाषा रो जको रेलो चालियो हिन्दी रो ओ कवि उण मे ग्या निना को रे सफियो नी अर फटाफट कविताना लिखणी सरु करी । भाषा रो जको रूप कल्पित जी अर स्वर्गीय मनुज जी री कविताना मे हे सागी निसो ही उठान आ री कविताना मे हे ।

श्री निरकुश नागीर का श्री जगन्नाथ जी रायल रे घर मे सवत् १६७४ की वसत पचमी नै जलमिया ने उचिन शिक्षा लेय कर १३ साल पेली ही नौकरी कर ली । श्री निरकुश जी री कविताना विकास रो मारग बता रयी है ।

मजूरगा--री--भोलावरा

आधूणे खेता में छोरी में फइव पाटवा जाऊँली
बाबलियो आयै तो येजे दिन आप्या पूठे ग्राऊँली
तू बेजरहा य दाया ले ऊँतल में जापर बूट्याजे
तू राध लीचढो हांडी में जा छ़ाछ़ राबड़ी तो ल्याजे

टाबरिया जागे रोवैला तू चासी रोटया लेलीजे
दो कांदा छीकै पर पड़िया तू बाट बाट कर देनाजे
हाँ ! आज देनगी देदी तो रेजी दुमको मगजाऊँली
नागा टाबरिया रै सारू अगरपा चार सिवाऊँली
आधूणे खेता में छोरा

दिन चार किया में काड्या हूँ जायै ग्हारो अतरजामी
एडा हा बोरा जी मिलिया एडा ही मिलिया आसामी
वे एक बार रुपिया दीया आगी उमर रा बेगारी
श्रो भोलो साव रो जाया में तो समझ समझ हारी

तत्तो, मम्मो जायै कोनी कोई भी आ धमका जावै
गेली गाडर ज्यू श्रो चमकै मोइ भी हाथ बता जावै
खेता य मीठा डोकलिया भायै चूसण नै लाऊँली
पण तू भातो बेगी ल्याजे नहीं तर भूला मरजाऊँली
आधूणे खेता में छोरी

पाइठय राधै साग वाग टाबरिया सारू लेलीजे
तू पोटा नै मोड़ी जाण्ये जागे जितरै घर में रीज्दे
बोरा रै चूची लागणदे मत बोरा चुगणने रेजाजे
पण सिणिया रो भारो वेटा पाछी आँनी लेती आजे

तिभ्या रा वाई राघाला में पाछी आ नतताकैली
कावड में काचरिया मिलग्या ता तोड साग रा लाकैली
आयूगे खेता में छोरी भई कडक काटवा जाकैली

घसियारी

उठ तडके घड़ी अंधेरै में जद दुनिया सती ही सारी
वा एक घास रा भाग नै, कावड में जाती घसियारी ।

ओ घणी राग सू रू दयाडो- माचलियै सता खावणियो
जिण रै ऊपर आभा नीचै घग्ती ही साल सगलखिया
जिण रै छोटा छै टाचरिया, जिणगे पाचडियो फाटयोडो
भुरटा काटौं सू बीथाडा, ऊँदगियाँ कुट कुट काटयोडो

जिण रै धन माया पोटा री, सौ चीत सगती थेपडिया
जिण रै सली रा चीतरिया, करता अपनी पूरी घडिया
दृष्ट्याही मूजडली मायै- पड रैता सूखा लोपडला
जिण रै आसड़ा साथीडा- खाता रैता दुख गोतडला
आ घास फूस नै बेच पट में भार नापती दुलियारी- उठ

दो पोर रात तक घाग जाग टाचरिया नै बहती काणी
वे एक सहर म रैता हा मेलों में राजा श्री राणी
सुणती सुणती हुँकारो जद उण टाचरिया रो सो जातो
तो एक मुसाणा रो टाँचो ओ मू पो पल में हो जातो

दलती किरत्यां नै देख देख भद कूफइलो बांगा देतो
सूता री नींद उद्यावण नै कुफइ कुँ रो लाधो लेतो
तो उठ माटी रा दिवला नै आ तुली दिलाती जोवण नै
घड़ी में आटो पीसण नै, दो चार सोगरा जोवण नै
डोरी, दतेलो हेर फेर जावण री करतो तैयारी— उठ

गिर मिर बरसै मेह मावटियो, बारँ टापर ठडी चाजे
ओ इन्द्र धडूकै ठेर ठेर रीसा बलतो गूँजै गाजे
पाटयोड़ी भोली में बाधो, फम्मर रे छोटे हालरियो
दो फादा ले सूयी मिरचा— वो एक रात रो सोगरियो
कांफइ में खेजइली नीचै दिवइ री कवली मोर टाँग
वा वेगी वेगी घास काट, रू खौं री टाल्यौं काट छौंग
फिर बैठ बैर री थोट पछै, वा टावर नै बोबो देती
वा खोल पोटनी भाता री— वेगी वेगी इत्ता लेनी
रे सेर कगूका रँ ग्वातर, वा भरती रापती बेचारी—उठ
वे एक गाँव रा ठाकरसा घोड़ों रँ घास मगाता हा
आनी, दो आना देता पण ऊपर सू रौब जमाता हा
घोड़ों नै गणो लावण नै वा दाल चिणा री भिनियोड़ी
पण इणरा टावर भूखा हा, वा किसमत इण सू खिजियोडी
कुत्ती रा हुचरिया बैठा, बीमै फररा री धाली में
पण एक भिनज रा टावरिया भूला सूता दीजाली में
छानै छानै बोरयो टाणों घोडा मुढा सू छुटियोडो
हा दाल पाव भर पर मेडी, घोडा रो जूठण उठियोडो
वा माग सरयो भूखों रो— वा गदँ लेण दूजी भारी
उठ तइकै घड़ी अघेरै में

उठ कठ भण्यो ले सींग कमाई वारी थारै बच जारै
 तू कात रेंटियो कपडो करलै, पैसो घर में बच पावै
 कर गाव गावरी जात २ री एकठ फेर सभल जा तू
 यू जाट, कुन्दार, चमार, सभी भाई रो भाई घरजा तू
 मेराडरान री पचायत परजामडल मे आज्ञा तू
 यो दुख होवेगो दूर, वणैगो अपणै घर रो राजा तू

श्री माणक्यलाल वर्मा

पारिचय—राजस्थान तो काँई आरखै हिन्दुस्तान मे ही इसो कोई मिनरस कोनी लादे जका वमाजी रो नाव नहीं जाणतो हुवे । वयू के थै छोटे राजस्थान रा प्रधान मंत्री राजस्थान रा प्रातपति रे चुकिया है । इण टेम आप अ भा वामेस कार्य समिति रा सदस्य है । इण तरिया आ सही है के थै राजनीति रे खेतर में ही काम करता रया है पण साहित्य सू भी इण रो मोक्लौ लगाव रयो है ।

जिण टेम, मेवाड मे प्रजा भङल री थापना कर गाव २ मे उण रे प्रचार करणै री जरूरत पड़ी उण टेम वमाजी ने कवि बरणो पडियो । इण री कविता मे जनता ने जगावण री ने एको राखणै री सीस है । भाषा सरल होता थका भी नीरस कोयनी । सरसता ने भावुकता रे मेल सू कविता बोल चोरौ लागै ।

श्री वृजलालजी वियाणी री तरिया काश वमाजी राजनीति रे सगै आपरै साहित्यिक स्वरूप ने भी जीवतो रासता तो कितरो चोरौ हुतो ।

किसान

उठावै दुख अतरो क्यू करसाण
कड़ी जेठ की ज्वाला में नू कइ लेवाने वाले देह ?
फाली अभियागी यतो में, कई होवाने भेलै मेह ?
बंगल भीतर घाल भू पड़ी जांगी मण कर क्यू जागे ?
पाठ्यो कथल्यो डाल पीठ पर तापे क्यू धूणा आगे,
हा हा हू हू करे मदद पर कोई न धरै आवै है,
थारा मूढा आगे यारी मेनत लूट्या जावै है,

रूडा, सुर, सियाल सुसल्या,
काई नी मानै थारी काण
उठावै दुख अतरो क्यू करसाण,

हाथो मस्की रागं, छाछियो, खोदे फिर पाया जावै,
बारा महीना पचे चाङ में तो भी गुड़ हाथ न आवै,
रोज उमलबो, गलबो, बलजो रोली, सीनी, लागी लार,
मण दो मण ज्मू परे धूधरी राध 'र खावै पकै न पार,
जतनी मकी उधार लायो 'खावा' कारु 'जुकी नहीं,
हांसल बीज चढ्या ही जावै रीत रिबाना रुकी नहीं,

रिसवत, लूट, फूट, दुसमण री
धा पर तथी कमान
उठावै दुख अतरो क्यू करसाण,

दैंटो लावै, पटी घोवती चली अगरी मारा सु,
घरवाली जद जाय व्याय में मांग घाघरो औपं सु,
करै भैस की थयी चाकरी तो भी पी न सके तू छाद्य,
होवे शायण घर घर भटके बीन मिले नही बिगडे ताद्य,

धौआलीस

एक लूगड़ा साटे पाछी काढी वासठ री ढाकी,
छोरां नै गुजराती होग्यो, मिलै न अजमा री फाकी,

नटगी भर्मी, सरग तक बदल्यो
मिटगी जाण पिछ्हाण,
उठावै दुख अतरो क्यू करसाण,

बे कुरखी पर तू जूत्या में बे गादी पर तू धूला साथ,
सू धरती भुके सलाम करै पण बे नहीं जरा उठावै हाथ,
थारा सोना पर मौज उझै, थारा रोना पर है रग राग,
पल भर तू हंसलै तो धधके सलगै दवानल री सी आग,
थारा बच्चा नै रात्र नहा बे-रोज उझावै है पकवान,
घर टूट बल्लोडा दूणा हाग्या बठी महल है आलीशान,

नाथ न भारे उठावै, गधा पर
लाद लाग पिछ्हाण,
उठावै दुख अतरो क्यू करसान

उठ भठ भणबो लै सीस, कमाई थारी थारै बच जावै
तू अत रेंटियो कपडो करलै, पैसा घर में बच पावै,
कर गाव गाव री जात जात री एकठ फेर संमल जा तू
यु जाट, कुम्हार, चमार सभी भाई रो भाई बणजा तू,
मेवाङ्गन री पचायत परना मडल में आबा तू,
यो दुख होवेगो दूर, बणोगो अणणे घर रो राजा तू

डरै कदी मत, दवै कदी मत
राख डील में प्राण,
उठावै दुख अतरो क्यू करसाण,

बाप नै वेदो छलै है, रुस काटा रा फलै है,
आज दुसमण है गढो मे, घर-दिया सू घर बलै है,
शूरता गम मे गलै है, पच मारग सू टलै है,
राज बल री घट चढ़ी मे, पाप रा पूला पलै है,

श्री गणेशलाल व्यास "उस्ताद"

[परिचय—जिण टेम मारवाड में सूती गणा बेती ही उस्ताद नै उणटेम भी चेतो हो अर न खाली खुद नै ही चेतो हो मुलक रा मोट्यारा नै चेतोवण मे भी घो धरकत फर दी ही 'मुलक नै मोट्यारा माथा देणा पढमी' मारवाड री गली गली गूज उठी ।

उस्ताद परायै तापड़ माथै रम्मत घालणियै मिनखा माय सू फोयनी आपरो घर फूक तनामा देखणियो मरद है । जकै आजादी री लडाई मे जेला गयो नै वरवाद हुयो पण आज आजादी रा सुख भोगना में भायला सू तारै रेर भी लिलाइ मे सल को घालियोनी इमै मिनख रा अनुभव किता कडा-कवला हुनै है जकै रो आपा अणमान लगा सका हा ?

उस्ताद दिगलै री तरिया खुद बलियो पण कमतरिया-करसा नै धनणो दियो है । राजस्थान रो ओ लोक गीतकार जने जलजलो लाणो चात्रे हो आज उणरो रूप देग्र र बसक्या फाटे है । फारा आज उस्ताद फेरु यो सागी काम मे आपरो जीवण होमतो ? पण फधि री मजबूरी है के उण री प्रतिभा अर सगति नै राजस्थान सरकार रै पब्लिसिटी विभाग री भीता लील रयी है । आज भी उस्ताद रै दिवई में ममर सा हगोला आवै है । वो कमतरिया नै करसा सारु काम करणै ताई उम्मीन रयो है पण कर को सकैनी ? क्यू ? इण रो उत्तर उस्ताद रै आररा मे समाज रै अकल रो दिवाली है ।

उस्ताद माथै आज भी राजस्थानी गीत साहित नै गरुर है नै आगं भी बराबर रेवैला ।]

बीती बात हजूरों की

आ कमतरियों रा हाथ हेम स जड़िया
जद दे क्यू भूना मरिया !
फविरजा । इण रो म्यागे दो
ठाकुरजी । ये हरजानो दो

दे मरी कमाई खाये
घरती रा घा निरजावे
क्यू जग माथे रा मोड़ पगामें पड़िया !
फन देणा रूख उन्नड़िया
ठाकुरसा । इण रो उत्तर दो
घोएजी । आप पद तर ग

जो टाली हल ददकारे
चोवरण स उद कगी
बा पाणी म उद लाग गीगणा मरगी
गीगा की छानी जदमी
घर पीबण ने जया काना
पग वैरस ी घग्गे बोती

हय पर कदगदा बाया
मैग बर ने निरबाबा
मे बनी भदक ने मैग मग्गी मैग्गी
जद विदला पीपद देणा
जो मग्ग रिग्गवान हेग्ग
बदलर मोटबं े हेग्ग

धीली बात हजुरा री

म्भाराज टीपणो लाया
 बे माता सू मिल आया
 क्यू कमतरिया रा करम वाचता अटकै
 ने माल मुफ्त में गटकै
 अै निपट राम रे नेडा है
 अणपद बजमान, गधेडा है
 अै छापा तिलक लगावे
 बे खोटा करम कमावे
 अै करम कपाली ठोक करै सतकी
 अै वैती गाडी रोकी
 रकियोडो पाणी सङ्गे परो
 अणखडियो नारो अङ्गे परो
 कविराजा ! ओ रजवाडो
 इंदर रो घण्यो अरखाडो
 अै मैल मालिया मोटर घोडा घोडी
 करसा री कम्मर तोडी
 मैला में मारु सूता है
 भरती रा बोझ अणू ता है
 अै खेत आध में बाटे
 ने लाग सवाई लाटे
 अै कूच दही धी साग खोस ले सारो
 करसा ने लागे खारो
 हद बेगारा री मार पङ्गे
 नद मिनख जिनावर अेक पङ्गे

श्रे दशम मन्म फसाई
मुशी चपडाली नाई

श्रे हजलदार कणवारणा धामी खोटा
फरसां ते मारै सटा
धाणायत बोलै फुड घणा
करसा रा मन्म बरुड घणा
श्रे नित रा फोडा घालै
डरिवा रू काम न चालै

इण धरती री घणियाप सरी हालीं मे
फुलवाड़ी है माली री
धण-सपत सग मजूरों री
अब वीती बात हजूरों री

जाग रसावका सिपाई

आपणो ससार न्यारो जीवतो मद्द देण प्यारो
रुल रयो निकमापगा में धूल आपा रो अमारो
आज राजस्थान धारो न्यान नै; अभिमान सारो
सिखर सुनो बेजगा में सिर लुकावै वण बिचारो

इण घड़ी में वेर क्यू वीरा लगायी
जाग रण बका सिपाई

जाग रणवका सिपाई

' जिय रमायो मोले मैयो सुरमो रजपूत सैयो
 ' आज उण आडापेली रा हाय गमग्या सीस गैयो
 ' फर धारो नौद लेणा रख्यात सू विपरात वैया
 ' छोर ले जीवण तला रो छार माथे बैठ रेयो
 ' क्यू गमावे सँग पीढ्या रा कमाइ
 ' जाग रणवका सिपाई

आज आडा आदमी नै और अककल री कमी नै
 राख आडा दे दिलासा भीमग्या जवरा जमी नै
 ' रषकां री वेगमी नै माभिया री मर्दमी नै
 ' भूल नै देखे तमाता भूत लोगो हाकमी नै
 ' राज री कूची दलाला नै दिराइ
 ' जाग रणवका सिपाई

बाप नै बेटी छले हे रूख कांटा रा पलौ हे
 ' आज दुसमण हे गढी में घर दिया सू घर बलौ हे
 ' शूरता गर्म में गलौ हे पच मारिग सू टलौ हे
 ' राज बलौ री घट-चटी में पाप रा पूला पलौ हे
 ' भूलग्या विरपच निबला सू सगाइ
 ' जाग रणवका सिपाई

' हेत में हड़ताल अइगी द्वेष में मुख चाल गइगी
 ' खूसटा री लायकी में खेत-खइ री खाल कटगी
 ' समभत्या री साख सइगी धीरता बेमार पइगी
 ' लीडरा री लायकी में वापिया री वास वइगी
 ' नायक री नीत सू हटगी भलाई
 ' जाग रणवका सिपाई

आन रा सस्तर गीषा है धार छुँ अककल सवा है
 सँग मुध-मुध साभ रेणा ह्य बमाने री हवा है
 आपरी अककल गरा है ने बमाने ने खा है
 तो भारय मैदान कैणा ह्य बमाने री दवा है

आन जामत सीस में धरती समायी
 बाग रणधर्य सिपाई

पिया आगै-आगै हालो

भाइ धामा मुधरा हालो पिया आगै-आगै हालो
 आगै हाल्यो मिनख जिनावर पगा ऊभ हाथो खातो
 अजा आगै हाल्यो मूढ सिक्कारी गडका पर लाठी बातो
 आ जुग जुग हालै मानखा जीवण रा नाव उछाला
 भाई धोमा मुधरा हालो—पिया आगै-आगै हालो

आगै हाल्यो वो नर-राकस मिनख मिनख नै जिण खाया
 आगै हाल्यो वो खेतीखड मिनख जोत नै हल बाया
 ओ पग पग फाटा भागता माण नै कियो सवालो
 भाइ धोमा मुधरा हालो पिया आगै आगै हालो

आगै हाल्यो भोपा प्रोयत कामण सीव्य वैद भण नै
 आगै हाल्यो सर सिपाही बाइ छोड राजा यण नै

पिण्य आगै आगै हालो

ओ बानै सा आगै वधै मरतोडा खानै टालो
भाई धीमा मुखरा हालो पिण्य आगै आगै हालो

अत्र फरसा कारीगर जाग्या जूथ बोंध आगै वधसी
अटक करै आरै मारग में बारा धड पल में पडता
हय नित री हलचल माय नै जीवण रो सार समालै
भाई धीमा मुखरा हालो पिण्य आगै आगै-हालो

बलम लियो सो डीगो वधसी कद ओछो पङ पाय नहीं
धमी फोङ घरती सु निकलै बीज पतालां भाय नहीं
ओ गया रूप आवै नहीं रुक जाणो जम रो भालो
भाई धीमा मुखरा हालो पिण्य आगै आगै हालो

पाछो पण कुदरत सु श्रँबलो रुक जावै सो मरै परो
जग जीवण नित आगै हालै ओ कुदरत रो नेम खरो
पन धीता कद पाछा फिरै कद विरला करै फडालो
भाई धीमा मुखरा हालो पिण्य आगै-आगै हालो

आन र छत्तर नया है धार सँ अकल सवा है
 सँग सुध-सुध साम रेणा ह्य बमाने री हवा है
 आपरा अकल गना है नै बमाने नै रवा है
 तो भार्ये मैदान कैणा ह्य बमाने री दजा है

आन आपत सीस मं धरती समायी
 आग रण्यरक्ष सिपाई

पिरा आगै-आगै हालो

भाई धामा सुधरा हालो पिरा आगै-आगै हालो
 आगै हाल्या मिनख जिनावर पगा ऊम हाया खातो
 अजा आगै हाल्या मूढ सिकारी गंडका पर लाठी चातो
 आ जुग जुग हालै मानखा जीवण रा नाव उछालो
 भाई धामा सुधरा हालो—पिय आगै आगै हालो

आगै हाल्या यो नर-राकस मिनख मिनख नै जिण खाया
 आगै हाल्यो वो खेतोखड मिनख जोत नै हल थाया
 ओ पग पग काटा भांगता मारग नै कियो सवालो
 भाई धामा सुधरा हालो पिय आगै आगै हालो

आगै हाल्यो भोपो प्रोयत कामण्ये सीग्य वैद भय नै
 आगै हाल्यो सर सिपाही घाड छोड राजा थय नै

पिय आगे आगे हालो

ओ खाने सो आगे वधे मरतोडा खाने टालो
भाई धामा मुघरा हालो पिय आगे आगे हालो

अन्न फरसा कारागर जाग्या जूथ बोध आगे वधसी
घटक करै आरे मारग म नारा धड़ पल में पड़सी
हय नित री हलचल माय नै जीवण रो सार समालै
भाई धीमा मुघरा हालो पिय आगे आगे-हालो

बलम लियो सो डारो वधसी कद ओछो पक पाय नहीं
झमी फोड़ धरती सू निकलै बीज पताला आय नहीं
ओ गयो रूप आगे नहीं रुक जायो जम रो भ्रालो
भाई धीमा मुघरा हालो पिय आगे आगे हालो

पाछो पय कुदरत छु अँवलो रुक जानै सो मरै परो
जग जीवण नित आगे हालै ओ कुदरत रो नेम खरो
पल घाता कद पाछा फिरै कद विरस्ता करै कसालो
भाई धीमा मुघरा हालो पिय आगे-आगे हालो

और फूल सज हुये न इनरा नितरो लाल हुयो ओ फूल
किण मदवै री चिता मायनै उठियो इण गुलाब रो मूल
देख देस दाया रो भुरमुट वार वार-ओ उठै विचार
मरयो हुसी कोई मतवालो अपणी प्याली अठै प्रसार

श्री अमर देपावत

परिचय — स्व० मनुज देवानत रा बडा भाई श्री अमर देवावत राजस्थानी साहित्य नै उण प्रिचविख्यात कलाकार अमर सैयाम री रुनाइया रो अनुनाद दियो है जिण नै पाकर हरेक भाषा गौरवमयी हुई है। श्री देवावत रै अनुनाद नै पढर हर कोई मिनग्न आ वात के समैला वे हिन्दी मे हुयोडा स्वाइया रा वीमिया अनुनाद सरसता नै कोमलता मे इण री होड को कर सकै नी।

आ वात सही है के प्रतिभाशील कवि रै वास्तै मौलिक रचना लिखणी जितरी सोरी है, अनुनाद करणो उतरो ही दोरो है। मूल कवि री रचा री चिता-ई-चिता मे अनुनादक दुनलो हो जाया करै है। पण श्री देवावत ने इण काम मे आशा सू घणी सफलता मिली है। प्राधुनिक राजस्थानी साहित्य में अनुनाद करणै री परपरा सगला सू पैली इण कवि द्वारा ही पायम हुई है। इण खातर कवि नै जितरी बधाई दी जाय थोड़ी है। इण तरुण कलाकार सू राजस्थानी साहित्य मौलिक रचनाया री भी उड़ीक रावै है।

मस्ती रो संदेश

जाग जाग मतवाली मरवण, धीली रात, भङ्ग्या तार
कूक कुरभङ्ग्या रही ताल में, बोल रया पछी प्याप
लिया हाथ में जाल किरण रो आयो देव शिकारी एक
लीनी बाघ घरा री काया पास उजालै रो दे पेंक

लाज आयो धूरज आमै में, पी मदिग, कर आख्यां लाल
सुपनै में कुण कसो मनै, रे जाग जाग ठेकै में चाल
कुण जायै कद सुख जाय आ थारै जीवण री दारु
मूढ फिर मे गमा न उमर, मतवालो द्रुय गा मारु
धीती रात, कूक्यै दीनी ऊँचै सुर में बाग पुकर
खोल खोल, मतवाला बोल्या, ठेकै ने ओ ठेकेदार

बल्दी कर दू, वखत गमा मत, हे कितरै दिन रो रवाध
गयां पछै कुण आयो पाछो, भूठ भलौ आवण री आध
खिलै फूल बागा में कितरा रोज, देख, सुरज रे साध
और मिलै कितरा माटी में भर डाली स अतिम बाध

ले हँसता फूला ने सधे आवै चैत माए ओ हेर
कर जावै फूल रो टिगलो जातां हाथ आवरी बेर
देख मिजाजण, हरियाली आ हरी-भरी कितरी सुन्दर
पालै धार नदी री मधरी घामै सुर कलकल कर कर

सुण सुण री घादीली गहारी, कुण केवै मू धीमो बोल
घाह भरै किरण रे होठां पर छिक्कायो हे हमरत बोल
ले ले धो कुञ्ज पङ्को सामनै, याकी सब होयण दे धूर
कने गयां ए दोखै दगक, इ गर आद्या दीते धूर

मस्ती रो सन्देश

सुख दुख रै धूमता यू ही, फिर न कर तू फोड़ां री
कखल में सिर दिया सहेली, चिता किसी घमोड़ा री
देवदूत चाल्या उण जाग्या ले तारा रा तेज विमाण
जठै देह म्हारी री माटी रह्यो पिघाता बैठो छाण
और हँसी म नाख दियो बा दारू नै पाणी री ठीढ़
रग रग म रमग्या बो दारू, किया सऊ में उणनै छोड़
और फूल सज हुयै न इतरा, जितरो लाल हुयो ओ फूल
किण मद्रवै री चिता भायनै उठियो इण गुलाब रो मूल

देख देस दाखा रो मुरमुट वार-वार ओ, उठै विचार
मरयो हुती बोड मतवालो श्रपणी प्याली अठै तिसार*

श्रे प्रिन पइसा नहिं बात सुणै रिदत मू सगला काम मरै
सरकार घणो घाटो खावै बन्त मे खूजा आप भरे
मैं खुलमखुला दी सुणाय मन मे मन मे सै लोग भणै
चोरा रा चाट्या है अफसर भूजा री बसक्या क्रिया सुणै

श्री भीम पांडिया

[परिचय— श्री भीम पाडिया अक उठतोडो नौजवान कवि है। इणरी कवितावा में जनता री आग्राज नै समय री माग है। कवि रो सुर मधियोडो न भाषा रो बणाव ओपतो है। जदो कवि आपरी सावना मे आमण सू नहीं डिगयो तो साहित्य मे आपरो चोखो स्थान बना सकैला।

कविरो जल्म रामरज्जी पाडिया रे अठै सवत १६८६ री असाढ सुदी १३ नै बीकानेर मे होयो। स्वानीय छापा में कवि री कवितावा नरावर छपती रेते है। राजस्थानी साहित्य कवि सू खासी आसा राते है।]

दिवलै री जोत

श्रे दिवलै री जात । श्रवे तूँ श्रेक सरीसी जगती रह,जे ।
 चीर श्रंधेरो भारत रो तूँ श्रबँ उप्राना करती रह,जे ॥
 चपया मकोझा से बनवाला, निरधण गुइ-मेली आ घेरी ।
 ध्याग कानो मूँ चूमे हे, श्रवे निघंङ्गने म नदि देरी ॥
 ज्यूँ बुध, राहू-केतुडे सँ फरे कगाली चाँदइलै रा ।
 जदी थारे मे कला हुवै तो श्रवे खलाली करता रह,जे ॥
 श्रे दिवलै रा जात ।

श्रवे क्राति री जात जगी हे, जन् कुनवाङ्गे सगलो दीसै ।
 निरधणायँ रे मगरा माथे, धनवाना रो जाण कसीजे ॥
 भोवा भाव श्रवे श्रे हुयग्या, जलम जलम सँ श्रेइ पीसावै ।
 भूल जायला 'दशा आपरी, आने याद दिराती' रह,जे ॥
 श्रे दिवलै री जोत ।

देऊँ तन्हें भरपूर तेल हूँ, कद क्राति में घटी मती तूँ ।
 निरधण भा बलजावै साथै, इती क्राति म बंधो मती तूँ ॥
 देख । पून रे भालै सँ भी, हब हब कर भूट बुझा मता तूँ ।
 जेठ महीने री किरणासी सदा चमकती रह' जे ॥
 श्रे दिवलै री जोत ।

श्रे दिवलै री जात । क्राति री मूँ पड़ियाँ सँ लपट उठादे ।
 घण्टे घेण सँ लण्ड भयेदमइला री चोटी पहुँचादे ॥
 जक खोस निरधण री नादिया मबलां म सुख सँ पाव्या हे ।
 बाँरी काचा नोंद तोइ, तूँ चेता श्रवे कराती रह'जे ॥
 श्रे दिवलै री जोत ।

दिवलै री जोत

वेसङ्कलै रा लोग-सुगाइ, राम-रज रो अनुभव करलै ।
गौंधाजी रा गम रज ग साचो सपना साचो हुयलै ॥
जितै चाँद सूरज चमकै है, तूँ भी जितै चमकती रह'जे ।
म्ह री भारत मायङ्क माटा माथैसटा ताज चमकती रह' जे ॥
ओ दिवलै री जात ।

खुद सू निमलो जड होय मिलै कुछ भाग दया को बताया करो
सगलो जड आनर पार करै डर सीम नदैन भुजाया करो
जड हिम्मत हो कुछ काम पढ़े मत जीव जरा भी लुजाया करो
घर को नुकसान यगै जड भी मन देस भला मे लगाया करो

श्री हीरालाल शास्त्री

[परिचय—“ कुछ सहृदय पाठकों की माग के जवाब में ये नये गाने बनाने पड़े हैं । कई सालों से छटे हुए अभ्यास को पुनर्जीवित करना जरा मुश्किल होगा ।” शास्त्रीजी आ शब्द है साथै सन् ५१ रे दिना में आपरै लारलै अभ्यास नै पाछो निना लियो निणरी परतक साख अँ कवितावा है । राजस्थानी में कवितावा लिगएँ रो उच्छ्राव शास्त्रीजी नै ठेठ सृ रयो है । ‘सपनो आयो घणो जमरो’ आ री अक मोकली रयात पायोडी कविता है । आ शास्त्रीजी री खूबी है के अँ ग्याली सपणा देखणिया ई कवि कोयनी सपना नै साच करणिया सरमा है । - -

शास्त्रीजी रा गाना में जिनगानी री करडी बघली, ताती ठडी नै ठोरी सोरी घाता रा छोल उछाला मारै है । ‘पुराणी पूजी’ री पैली लाइन सँ लगा र ‘फफड भाव’ री लारली लाइन ताई शास्त्रीजी रै जीवण री गगाजमनी पोथी है जिणरा आखर आख रा आसू, होठा रो इमरत, हियै री हिम्मत नै साचै सेयाग्रत सँ लिखियोड़ा है ।

शास्त्रीजी’ रो जीवण चढाव रो जीवण रयो है । वनस्थली विद्यापोठ रा आप सस्थापक है नै महान् राजस्थान प्रात रा भूतपूर्व पेला प्रधान मंत्री । अँ चिमटो रोप, र जमण आला फफड भावी पुरुष है । सफलता ही जिण रो मजलु है । इया री कवितावा आधुनिक राजस्थानी कविता साहित्य में हमेसा जागती जोत रो काम देवै ला ।]

पुराणी पूंजी

पुराणी पूंजी रू, भागा मान जा, यदि काम चले लो
पुराणी पूंजी रू भाया मान जा

धारा बहकर बड़ा हुआ छा बड़ा करवा ये काम
पण बहका की बगी कुमाईं अर दे कीने काम रे
दि काम चले लो

धारो शपो या छै तू तो श्रुपिया की सन्तान
श्रुपिया का सा काम करे ता दुनिया भी ले मान रे
दि काम चले लो

जाग जायै छै याग पुरखा छा जोधा बलवान
वा की सी तू करे भादरी जन् रे यागी स्थान रे
दि काम चले लो

गुण भी छा अर मौफ भी छो बडा हुआ जद सेठ
गुण कीने मौको भो निबल्या मुश्किल रेसी पैठ रे
दि काम चले लो

राम मुलाबिम मामूली की पेली जमती धाफ
अब तो सेवा करवा बिना रू फदर बराबर खाक रे
दि काम चले लो

परजा मडल कागरेख मे शुरू करयो तू काम
काम करयो जद दुख भी पायो और मिल्या नहि दाम रे
दि काम चले लो

अहरेज को करघो सामनो चल्यो गयो तू जेल
रजघाड़ा भी भाया तन्नी दियो जेल में टेल रे
नहि काम चलै लो

जेल 'कॉट' तू माला पेरी होगो भारो नाम
दुनिया थारी जै भी बोली नेता दानो घाम रे
नहि काम चलै लो

चल्या गया अहरेज आपड़ा राजा छोटथो राज
जन् पाछै तो कैरगो काई थारा ही सब साज रे
नहि काम चलै लो

पैली जो तू करी कुमाई ऊ को चूम्यो मोल
अब जा करसी सो तू पानी हिरदा में लै तोल रे
नहि काम चलै लो

सेवा को तू नाव धरै अर निजू बणावै काम
दुनियां सारो मरम ममभसी तू होखी बदनाम रे
नहि काम चलै लो

जरक सुणल्यो

जनता तिनै सुणावै प्रभुजी जरक सुणल्यो
कद की खड़ी पुँकारै अब तो जरक सुणल्यो
जबरा स्वरज प्रायो दुःख मोकली लियायो
कद ताई भोग्या जात्या प्रभुजी जरक सुणल्यो
आजादी आगो कह छै राटी' र कपड़ो गायन
जनता छै भूलो नागी प्रभुजी जरक सुणल्यो

अलगोजो

पीसा को मोल घटगो चीजां सै होगी महंगी
पीसो भी पल्लै कोनै प्रभुजी जराक सुणल्यो
पैदा फरे छा अणयो गुजरान भी चलै छो
लेवो कटा स आगी प्रभुजी जराक सुणल्यो
पृ जी को जोर भारयो मिनवा की पूछ कोनै
तइपै मजूर माग प्रभुनी जराक सुणल्यो
भे भी मिनग जुवावा बोले छै आन्विसी
सुधरवा सरै जमारो प्रभुजी जराक सुणल्यो
अछूत हा वा हरिजन ये नाव अच चुमे छै
श्रीरा जिस्या भे को न प्रभुजी जराक सुणल्यो
आया गया नै भे भी दे छा सग्य कदै ता
लेता फिरा छा सग्या प्रभुजी जराक सुणल्यो
मुलाजमा कै ताइ हाकम हुया ये सारा
नेता बण्य फिरै छै प्रभुजी जराक सुणल्यो
घाया पतीजे भूया गेटी दिवावो पैली
स्वराज कीई चाटे प्रभुजी जराक सुणल्यो

ललकार

सुख संपत् बीच रहा जद तो मत गर्व गुमान रखाया करो
विपत्त जट हो तन्वीर करो दफनाक मती धबराया करो
नरमी कर आपसरी में रहो फरजा बण भाया मुलाया करो
बबरो बण जा अपमान करे भट जोस जग सो दिवाया करो

खुदसूँ निमळो जद काय मिलौ कुळ्ळु भाव दया का ब्रताया करो
 सचळो जद आकर वार करै डर सास कट न भुकाया करो
 जद हिम्मत को कुट्ट काम पडै मत जाव जरा भी लुकाया करो
 घर को नुकसान बणै जट भा मन देस भला म लगाया करो

सुभ काम सरू कर आप जमा मजचूत रहा घबराआ नहीं
 जद भीतर बाहर साफ रहा गतरा सू कदे कदराओ नहीं
 सब मेळ करा सब साथ चलो सब एक रहो बिपराआ नहीं
 ललकार जवाब करा मरती सच बात कहा कलराआ नहीं

भगवान भजो बिसपाठ करा चित पाप कथा म लिया न करो
 उलटी सुलटा कोय बात करै पण मान कदे भा लिया न करो
 अब छूट सजीवण बूटि पिचा अर भैर कदे भा लिया न करो
 सत को पण आप कडो पकडो बिन सत्त उडा भा जिया न करा

तकदार का ठीकरो पाइ धरा पुरसारय लेल लिखाआ जरा
 सब भूठ निलाइ लिखत करो अब भाग कै आग लगाआ जरा
 मुरदापण ह्याइ कै मर्द बणा मरदी कर ग्याल दिस्तावा जरा
 दिल का धडका सब दूर करा डर ने डरपार भगाओ जरा

फक्कड़ भाव

जागै जागै फक्कड़भाव अर्जा अब नाग्या सरसी आ
 ' बिन स्वारथ सेवा कै ताई धारै फक्कड़ मेक
 ' ममता मो सारा हा ह्याइ लगन लगे बस श्रेक
 अर्जी अब नाग्या सरसी बी

मुल छुड़ भल घर भी छुड़ छुड़ै घर का बार
मान बड़ाइ बिन छोडया सू पक्कड़पण बेकार
अजी अब जाग्या सरसा जी

सेवा बै ताई ता पक्कड़ भाग्यो दौडया जाय
बाका जी नै काम होय सो पक्कड़ सू घतलाय
अजी अब जाग्या सरसा जी

दुनिया का मामूली जाता पक्कड़ जावे लोप
सत सू धूणा तपे सनातन जमें चीमटा राप
अजी अब जाग्या सरसा जी

धक धक करती भला फूटे जद चित्त होय बेचैन
नसो अणुता छाया रेवे मस्त होय दिन रैन
अजा अब जाग्या सरसा जी

काम करै सो करै लगन सू भिड़ जावे खम ठाक
धुन को पक्का पक्कड़ हावे दवे तन मन भोक
अजा अब जाग्या सरसा जी

पक्कड़ हा सो डरपै कोनै सदा होय निर्भक
दूजा नै डरपानै कोनै पक्कड़ पुरो ठीक
अजी अब जाग्या सरसा जी

मुसकल आया करै सामनो होय घणा मजबूत
दवे नरो घचरवे नारा पक्कड़ हा अंधूत
अजा अब जाग्या सरसा जी

कोइ नै राजी करजा नै करै न वेजा काम
 खुद कै ताई खुद नहीं चावै दाम हाय वा नाम
 अजी अब जाग्या सरसी जी

टुछा पुछी माता छोड़ै सैल करै आवास
 दिल समदर सा हा जावै जद फकड़ नै सावास
 अजी अब जाग्या सरसी जी

लाग लपट जरा नहि राखे चाले सदा सट

साबो-फकड़-मण-वा-सू-ही-बेसक-हावै ठट्ट

अजी अब जाग्या सरसी जी

कुण प्राणी सूतो कुण प्राणी जागै
 सरवर सू पछी त्यासोई भागै
 यो जग मपनो माचो मो लाग
 जाठ फस्यो पत्री भागण लागै
 दीसत आधो हुयो रे बटोही
 शैसी या माया विसेस

[परिचय— श्रीमती राजलक्ष्मी 'साधना' राजस्थानी साहित्य में मीरों ने महादेवी को काम पूरा कर रहीं हैं। जकी तपस्या, जकी भावना ने जकी लगन मीरों-महादेवी में है वे सगली बातें श्रीमती साधना में देखना मिलें हैं।]

राजस्थान का प्रसिद्ध क्रांतिकर्ता नै- 'चेतावनी' का चू गट्या' का कवि डा० केमरीसिंह जी वारहठ की सुपुत्री श्रीमती 'साधना' में उणा की आत्मा की अमरता ने भव्यता का दर्शन हुआ है।

श्रीमती 'साधना' का गीत आत्म आराधन ने भगवत अर्चन का गीत है। गीता में मिठास, भक्ति ने भावुकता को मिला है। राजस्थानी साहित्य मीरों की दृष्टि प्रतिमूर्ति ने पा'र फूलों नहीं समा रहीं हैं। आसा है श्रीमती 'साधना' की साधना आत्म जीवण चालती रहीं ने मातृभाषा के मंदिर में वे आपरा भाषण सुम चढाता रहीं।]

असो जिग रच्या राजवी

१

वीरा । घण, घर वसिया, रे, वास
करी, रे, मदलक, छोलिया
वीरा । भटकी, रे, व्याक, ही, कूट
सुर्ग चदी रे पद्दी नरक में
वीरा । भोग्या रे केताई भोग
रोग मिला रे अणपार रे
वीरा । अत्र ता करी दया दीन पर
भारा सतगुरु पकड़ी रे बाह
असो जिग रच्यो राजवी ।

तन जलया रे वीरा मन जल्यो
अै तो जल गया पाचू इ वीर
पाच पुरख दस नारिया रे वीरा
अै तो जल बल हाय गया राख
वीरा । जैठी ममटरिया री तीर
आयो गगन चढ स्वटी
या ता दीनो रे अेक रुदेस
पाव पघारे पल दाळता
अैसो जिग रच्यो राजवी ।

वीरा । आठ्यो रे भगती रा चार
साळ समता रा पैरया घाघरा

पहोत्तर

धीरा । दिवलो संजोयो रे साच रो
 मारग बुहारथो हरि रे नांव सु
 धीरा । श्रायो रे अनहद नाद
 उण रे साथै श्राया पीवजी
 धीरा । काई करू रे ब्रताण
 सरथ सुलाळा रे म्हारा पीवजी
 श्रैसो जिग रच्यो राजधी ।

२

नदलाल ! श्रायो, तो जोऊं थारी घाटङ्गी
 सोना रा रूपा रा पान म्हारै है नहीं रे कान्हा
 म्हारे तो श्याम । श्रेक चंदण री काठङ्गी
 मैं तो हूँ गरीब बहु, दीन श्रौ मलीन प्रभु
 बीमो तो स्याम ! म्हारै बाजरी री घाटङ्गी
 दिल री पुकार सुण श्रावो जे सावरा
 भूलण नै प्रेम डोर नैणा हदी पाटङ्गी
 साधन' सदा सभागो नित ही पुकारै काहा
 मिलबा नै श्राज्यो स्याम । जमना री घाटङ्गी ।

३

बागता पुरान नै श्रादेस
 माई, श्रैसो लियो रे जोगिया भेस
 माला नादा कमडल नाही न है भोळी हाथ
 गयी नहीं बन में, गयी नहि तीरथ, जग सु नवायो है माथ
 काया में रलियो है भँवर प्रलोभी हण सु ह तजियों यो देस

तेहोत्तर

धुय प्रायी सुतो, कुय प्रायी जागे
खरवर स पछी प्पासोई भागे
यो जग खपनो सांचो सो लाये
जाळ फस्यो पछी भागण लागे
दीसत आधो हुयो रे बटोही शैसी या माया वितेस

तन रग दीनो, मन ग दीनो
रग दीनो खील सतोस
बलमजलम रा करम रग्या में
जव लग रयो कुछ होस
अब तो मुन रे हो 'साधन' सागर फट गया सख कलेस

ज्यू सूरज चाद बटाउड़ा आभै नै ग्याली कर जारं
ज्यू नैणा नीर डलै डलकर धरती रा समदर भर जावे
भनको भीणो सो देकर ज्यू बिजली बादल नै डरपावै
त्यू फूल रिलै, आभो पिघलै दिवजलै जोत मे मिल जावै

श्री जगमोहनदास मूँधड़ा

• [परिचय—श्री जगमोहनदास मूधड़ा जीरानेर र ओके सम्पन्न माहेद्वरी परिवार मे पढा होणिया कलाकार हे जका खाली गीतकार ही नहीं चोग्या वादक सुरीला गायन नै ऊचै दरजे रा चित्रकार भी हे । साहित्य प्रेम कवि री खानगनी सपत्ति हे ।

कवि री भाषा लोमगीता चिसी मीठी नै कल्पना कूपल सु कवली हे । अध्यात्म नै भक्ति री धरती माये कवि आपरी कविता रो म'ल खडो करियो हे । जकी री नीच कवि आपरे पिताजी गिरधरदासजी मूधड़ा स प्रेरणा पार काठी भरी हे ।

व्यापारिक वातावरण मे र र भी कवि सुरमती र मंदिर रो पुजारी बणियो हे, आ जुशी री बात हे । आसा हे के कवि इण परपरा न ठेठ ताई निभासी ।]

गीत

दिना का रात जलया हंम हस, सुभग्यो बो घर-उगाली में,

बा भरण बवाडर, बलती ही
 सय में पतली सी बाटइली,
 अण बरिवा अण्युभिया दीइया
 चमकादा चम चम गतइली,
 व्यापल हो जिण सु मिलबाने
 यिदे में पीइ लिया चसगयो,
 बा भंप्या न टांवर सु गेती
 मिलयो री बिरिया में सुभग्यो,

बर बारा, पूल बना मुलके सुगुलाया आतरकाला में,
 दिना का रात जलया हस हस, सुभग्यो बा घर-उगाली में,

बा नियां फालवे बिसतूरा
 हा रया, उपक भेला मेली,
 बाणां न लाग रया प्याय
 पइका, तिल्यां य मेली,
 बालसु पर भूमो लिनबाने
 अरहुडा हुइ, पानी पइयो,
 बरने में टुक का हिला नही
 मिलयो य बिरिया में सुभग्यो,

बर बारा, बाजे बारसु बर बर बाया बाग पनाली में
 दिना का रात जलया हस हंम, सुभग्यो बो घर उगाली में,

ज्यू सूरज चाद बटाऊडा
 आमै नै खाली कर जावै,
 ज्यू नैणा नीर दसै दलकर
 धरती रा समदर भर जावै,

भक्तको भीणा सा देकर ज्यू
 बिजला बादल नै हरपाये
 त्यू फूल खिलै आभा पिघलै
 दिव जलै, नोत में मिलजावै,

जावण दारू री धार बणै, दल जाय मोत रा प्याला में,
 दिवला जो रात जलया हस हस, बुभण्या बा सूर उगाला म,

चठे फठे छे लाग रया अँगरेजी दफतर
गोलै हे अँगरेजी मे मे त्रात्र अफसर
होटल मे अँगरेजी दग अँगरेजी घटलर
गली गली में अँगरेजी अँगरेजी घर घर
हिन्दी ती उम्मीन सारी दहगी
अँगरेजी गया पण अँगरेजी तो रहगी

कुँवर कानसिंह भाटी

[परिचय—कुँवर कानसिं भाटी राजस्थानी भाषा रा श्रेक सिमरथ फवि है । इणा री कविताया मे व्यग्य री मोकली मोकलायत रे वै है । भाषा मायै इणा रो पूरो इदकार है । इया तो श्रे हरेक तरे री कविता लिखै है पण आ री आत्मा तो आध्योत्मिक भजना मेई घणी रानी रेयै है ।

कुँवर साज रो जलम भीकमफोर (भारवाड) रा जागीरदार ठा० प्रतापसिंह जी रे अठै पवत १६७१ री माघ सुती १२ नै होयो पण आ रो सत्रध वीकानेर सूई रियो है । आजकाल आप वीकानेर में तहसीलदार है । वरसा सू मरकारी पद मायै रेकर भी आप सदा मादगी सू रेयै है ।

जागीरी सरकारा मे पलर भी कुँवर साज जमानै नै उदल देण आला मिनसा मा सू है । आ री धर्मपत्नी श्रीमती सुनोध कुमारीजी जकी आज राजस्थान री लुगाया मे नई चेतना भर रयी है, रो जीवण कुँवर साहन सो साहस पूर्ण ही प्रगतिशील रचनात्मक है नै साथ ही सामतीवर्ग रे मारू श्रेक आदर्श है ।]

अंगरेज गया पण !

ठाठ बाट से अंगरेजी अंगरेजी खाणो ।
 चाल दाल है अंगरेजी अंगरेजी गाणो
 छूट छूट टाई रुमाल अंगरेजी बाणो
 रीत, नीत अंगरेजी रो उलभरोहो ताणो,
 हिन्दी : ईबेला में तकती रहगी,
 अंगरेज गया पण अंगरेजी तो रहगी ।

अंगरेजी रा तार चले कागज अंगरेजी
 अंगरेजी अखबार छपे खबर अंगरेजी,
 अंगरेजी व्यापार गजब चीजा अंगरेजी
 अंगरेजी रो खोर शोर सब कुछ अंगरेजी,
 हिन्दी रे मन री मन में ही रहगी
 अंगरेज गया पण अंगरेजी तो रहगी ।

कठे कठे है लाग रया अंगरेजी दफ्तर
 बोलै है अंगरेजी में से चाबू अफसर,
 होटल में अंगरेजी दग अंगरेजी बटलर
 गली गली में अंगरेजी अंगरेजी घर घर,
 हिन्दी री उम्मीदा सारो दहगी
 अंगरेज गया पण अंगरेजी तो रहगी ।

हिन्दी रा हॉ पूत परंत अंगरेजी चेला
 मू छ मु डाय मु डाय हुआ पंगत रे मेला,
 अंगरेजी री चक्काचौध में होकर गेला
 रीभ गया अंगरेजी पर बखग्या अलबेला
 हिन्दी तो दिनहो मसोष कर रहगी
 अंगरेज गया पण अंगरेजी तो रहगी ।

चौमासो

बरसै पाणी रिमझिम रिमझिम, गरजै चादल घर घरें घरें
 चमकै बीजल चारू गानी, छेहर टरारि टरें टरें ।
 भरग्या सारा तालर छीनर, नदिया में पाणी नीं जावै,
 हालीडा काधै लीना हल, कोडाया खेता नै जावै ।
 माटी रा घरिया माड माड, टाबर मन में होवै राधी,
 पाणी में खेलै छप छप छप, वूदे दीद ले ले बाजी ।
 बोलै मोरा पीढ़ पीढ़, बाटा म हरियाली आई,
 बस्ती में आयो घणो चाव, नेत्रो गात्रे मिल मिल भाई ।
 गाला गेड्या ले हाथा में, गाया चारण ने जावै है,
 देख देर हरियाली गानी, शिवङ्गो ज्यारो हरखावै है ।
 हरियाली पर लाल ममोल्या, जगा जगा पर पाछै आगे,
 पन्ना रे कठे में पोया, मासक रा टुकड़ा सा लागै ।
 मिटगो प्यास पपैये री, बन रा पछीडा फूल रया,
 ऊचोड़ी डाली हींड माड, बालक बारी सू मूल रया ।
 चौमासै में मौज मबैरी, मेरङ्गनो बूल्या सू भारी,
 अन धन सू कोठा भरजावै, 'वाह' सुखी होवै ससारी ।

सियालो

कट कट दात कटख्ये लाग्या, कापख लाग्यो तनङ्गो थर थर
 चर्दी कपकपी डेट कालजे, आग जगा लीनी है घर घर ।
 धूँशी ऊपर बैठा तापै, ओढ कावठी बूटा दाणी,
 खुल खुल खुल खुल खासी आवै, टपख्ये लागै नाका पाणी ।
 सरदी सू वाई टा आवै, अलस माड उवासी खावै,
 गरम चाय रा लेवै गुटका, गड़ गड़ होको पीता जावै ।
 टाबर टोपा ओढ्या आवै, ज्यारो सी बकरा चर जावै,
 बय्यासी

होठ होय जावे लीला छुम, नेया में पाणी भर जावे ।
 सरदी में दीडे खेलै हे, फाट हाथ पग न्यारा जावे,
 बाल बादला हे बेपरवा, रत्ती भर भा नी घबरावे ।
 श्राला पड जावे जद कद तो, आ जावे हे पूरी ठारी,
 गुनराता रो रोग व्यापना, बेदा रे बय आवे भारी ।
 कठै बठै पाणी जम जावे, रुखा ने दावो लग जावे,
 डापरडी खोटी बाजे जद, जदे फदे धूबर आजावे ।
 बड बड ऊडा टापरियां में, गूड छोट छोट कर सोवे,
 खोटो 'काह' सियालो आया, ऊठण री सरदा नी होवे ।

उन्नालो

आगण तप जानै तावड सू, टापरिया से तप जावे हे
 सूवा; रा नलता पटकारा, रुक रुक कर फेरु आवे हे
 निवडो घबरावे गरमी सू, कोरो परसीनो चाले हे
 कमस हो जावे ऊपर सू, जया डाल ने बा गाले हे
 उठे श्रलाया से शरीर में, ज्या पर चटपट मेट लगावे
 गरमी चट जावे कितरा रे, जया कालजा भी दिल जावे
 घडी घडी सू कठ सूय जा, होटा रे फेफी आ जावे
 ठडी ठडी माटकड या रो, पल पल में पाणी गटकवे
 पली से ले हवा करे हे, सेन नहीं पल भर भो होवे
 नाख निखाखा खरो ही दिन, बैठा ठाला यू ही खोवे
 कुचा जीभा काट काट कर, गली गली में सिसक रया हे
 कागलिया भी छुक्या दरता, काव काव से भूल गमा हे
 ठडी छीया तक तक रुक रुक, सेन मारगू सुस्तावे हे

तय्यासी

छाला हो जावे एड्या में, इतरो ओखो दुख पावे है
सोरै सास नींद ना आवै, रात रात भर चाली बलती
ऊनाले रो मौसम ओखी, 'काह' सदा रेवे है ततली ॥

पडित

आडा ऊबा तिलक बसाया, पोथी पतडा बगल दबाया
ल बा माला पकड़ हाथ में, जयै जयै में दोष जताया
गायत्री रो लीनों ठेकों बाकी सगला बैठा देखो ।
ब्राह्मग्यान रो हक बामण नै वेद शास्त्र रो ओ ही लेखो
मेज्या तनै पढण पदावण दुनिया नै रस्तो बतलावण
बरणी बा नीमण में कोरो अपणो मुतलब लग्यो बणावण
समझ देरता, तू है सेणो, लोक तनै देवे है मैणो ।
'कान्ह' छोड थोथी बाता नै भूठे जग में कितरो रैणो

ठाकर

बैठो मूच्छा रै देवे बट नसड़ी न राखे करड़ी लट्टे,
अरगीज्योडो फिरै घमड में अपणो रोच जमा लेवे भट्टे,
ऊबलिया कपडा नित पेरै दाग लगण देवे नही बैरे
ऊपर स तो घणो फूटरो, मन रो रोष मिटै नही बैरे
देख देख तन हावे राजी, नित रा बैठो करै मिजाजी
मेज्यो तो हो ठाय बरण नै आय गमा दी सारो बाजी,
ठाकरडा मुण लीजे गहारी, दो दिन री है दुनियादारी,
'कान्ह' कोप विधना रो है ला, फेर नहीं लागैला कारी,

साहूकार

बैठो गादी मसद सहारे, खा खा पेट निकल ग्यो जारें
क्षेय हकारां घण्टी अण्णुती, बैठो कोरी गप्पा मारै ।
पिचरगी पेचा सिर पर है रीपिथा स, भरियोको घर है ।
माया रै मद में भरम्याको, चढ़गो आख्या सिर ऊपर है
साहूकार बया कर मेल्यो, पोखण रो निम्मो सिर मेल्यो,
खुरच खुरच कर ख्याग्यो दुनियां कोरो भूठ, ठगो स खेल्यो
चेत चेत रे अब भी भाइ, सात जमालें जकी गमाई
बूच नगारो 'बान्द' बजैला, साथ चलै नही थारै पाई ।

पलसै बरै टावर खेलै खेत बणावै बानै पाल
हाली हल का ठाठ सु वारै गावै है तेजै री ढाल
मरद लुगाई यू धतलावै, आयो समो भाजग्यो काल
पी फाटी जद बोलाण लाग्या पात्र पखेरू पीपल डाल

श्री गजानन प्रसाद वर्मा

परिचय—हिन्दी र हबोला मारतै समदर र खारै पाणी सू
 बरसा ताई तिस को बुम्मी नी जद ओ कामणगारो कलाकार
 राजस्थानी री नाडी रो मीठो पाणी पीयण सारु भलै घरा
 आ धमकियो । आवतै ही इणरो कामण इसो चालियो के
 राजस्थान री प्रकृति, हरया भरथा खेत, चौमासो, सावण,
 भादवो, हल, फरसा, धोरा, जीव, जिनावर, मिनख मजूर, सैंग
 इणरी कल्पना, भापा, गीत नै सगीत मे आ बैठिया ।

श्री धर्मा गीत के गात्रे हैं, भुरकी नादैं है जओ सुणणिया
 को धाकैनी ओ भलाई हारो । इणरो कारण अरु ओ भी है के
 इये आपरो मारग अल गो निकालियो है, किणी चीलै माथे को
 बगियो नी । मिनख नै प्रकृति रो जिसा रा बिसा रूप लोगा री
 आख्या में लेरण आलो ओ कवि अत्रे टाली आपरी जलम
 भोम रतनगढ (राजस्थान) रो ही को रयोनी, उणसू आगे
 मोकलो आगे बढग्यो ।

रेल्वे और पी डब्ल्यू डी रा ठेकेदार श्री हनुमान प्रसाद
 जी रै घरा १५ जुलाई सन् १९२७ में जलम लेर श्री धर्मा
 बेगोई आपरै पगा माथे लड़ो होग्यो । साहित, मगीत, नै फला
 सू इणनै ठेठ सू चाय रियो । 'स्पन्दन' नै 'नये नियध' नाव री
 दो पोण्या श्री धर्मा री छप चुकी है नै और फेई छपवा
 आली है ।

आज काल श्री धर्मा, धीकानेर, में रह फर प्रात भर में
 कला रै प्रचार प्रसार सारु राजस्थान पला केन्द्र रै सगठन
 में लू रयो है ।

परभातै रो गीत

पोह फाटी जद बोलख लाग्या

पाँख पँखेरु पीपल हाल ।

छोटकी द्योराणी पीसण बैठी,

बाजर मोठ चिथा री दाल ।

बड़ी जिठाणी जायो गिगलो,

बाजण लाग्यो सोवन याल ।

नणद सुरगी सत्या देवै,

घर घर बानै बानरवाल ।

दिन चढ़ आयो गोवै उभ्यो,

गाया रो ग्हारो बान्ह गुवाल ।

आयो दूँटो हाथ गेडियो,

सिर पर बाधा लाल रुमाल ।

धान्हे लटक लाल लोटङ्गी,

सकड़ी है माटी री नाल ।

घर री धिराणी गाय उछेरै,

मदरी मदरी चालै चाल ।

आगण में दो (य) चुगै चिङ्कल्या,

बिखरेङ्गी मोठा री दाल ।

छोटी नणद भूगरो काटै,

लुल लुल साफ करे है दाण ।

दादी तयिी चरखो कातै,

बैठी है बै पीढ़ो दाल ।

राख रामङ्गी घोल सँवागै,

चतर चरखलै री बै माल ।

छीकी देकर हाकण लाग्यो,

'गाया नै गुवालियो (रै) लाल ।

पलसै बारै टाबर खेलै,

खेत बणावे बनै पाल ।

हाली हल रा ठाठ सुँआरै,

गावे हे तेजे री ढाल ।

मरद लुगाई यूँ बतलावै,

धायो समो भाजयो फाल ।

चौमासै रो गति

आवे चिमके बीजली जी

पुरवाई गे जोर ।

काली कलायण ऊमड़ी जी,

नाचण लाग्या मोर ।

खेत में द्यो हलकारो (हो)

बीजद्यो मोठ बाजरो (हो)

(फै) फाचर बोर मतीरा—

पूरब में लाल घुरज उगि आयो ।

हर्या हर्या खेत मुहावणाजी

बाजर चक्यो निनाण ।

खुरपा कसिया ले चलो जी,

द्यो मूछ्या पर ताण—

देण इतर धरयो (हो)
 मारुयो श्राज पावचो (हो)
 (कै) सै मिल राम भयोनी—
 पूरव में लाल सूरज उगि श्रायो।

मोठ लावणी फर चुक्या ग्हे
 कडबी काटण चाल ।
 स्यावड माता पूजल्योनी,
 तिलक करु में भाल—
 घरा घूमर घमकाश्रो (हो)
 काल नै दूर भगाश्रो (हो)
 (कै) सै मिल मगलु गाश्रो,
 पूरव में लाल सूरज उगि श्रायो।

सावणा-भादवै -रो गति

सावण सुरगो सरसावणो
 भादवो सुगो मन भावणो ।

काली सी कलायण घिर झावै है
 भिर मिर मेह बरसावै है ।
 बिजली रो बंद मुस्कावणो
 भादवो सुरगो मन भावणो ।

व्यारु मेर मोरिया मचावै शोर
 भीभरी भयावा करै चित चोर

पपीहै रो बोल छ्यणखावणो ।
भादवो सुरगो मन भावणो ।

हर्या हर्या खेत लहरावै है,
तेजइलै रा गीत फोई गावै है ।
भोला मारै पवन सुहावणो
भादवो सुरगो मन भावणो ।

नाचै गावै तीजइल्यो री तीजण्यो,
फोगडला में खेलै लुक मीचण्यो
मुड-मुड हँस बतलावणो
भादवो सुरगो मन भावणो ।

सावण सुरगो सर सावणो,
भादवो सुरगो मन भावणो ।

धोल चोल मे चीख डाल आख्या मे अरे घाले फाजल
मुक्तो मूटको वे माल खोस नेणा मे दुरा घरसे बादल
अ शाह बण्या डाको राले घर नोनत घाने है मादल
ओ सरवर नीर भरयो दीसै पण पीयण मे कइयो गादल

श्री सूर्यशंकर पारीक 'भारती भूषण'

परिचय—श्री सूर्यशकरजी नै राजस्थानी साहित्य सूं मोक्लो ई प्रेम है। गाय गाय घूम घूम 'र औ नीरोई जीवत साहित्य भेलो कीयो है। आध्यात्मिक जसनाथी साहित्य सूं आनै घणो चात्र रयो है। लोक साहित्य नै भेलो करणो भणणो-गुणणो नै सम्पादन करणै म आरी ठेठ सूं मनसा रही है।

इणा रै सम्पादन मे जीव समभोतरी, गुणमाला, शब्द प्रथ नै सरोधो नात्र री पोथिया छप चुकी है। जिणा री राजस्थानी भाषा रा सगलाई विद्वान घोसी प्रशसा करी है। आ रै सपादन री विशेषता खास कर आ रै अनुभवा री गैराई है। भाषा माथै भी आ रो मोक्लो इक्कार है।

श्री पारीकजी रतनगढ रा रैवासी है। आ रै पिताजी रो नाव श्री बालूरामजी पारीक है नै आरी जन्म तिथि १६७६ रो मिंगसर महीनो है। ओ साहित्य मे 'भारती भूषण' रै उपनाव सूं ओजसीजै है।

वे भर भर कथा नै ओढै

बा लीरी लीरी घाघरियो, बा छीट छीट चुनड़ी राती
 मुरभायोडो मुपडो नीचै, देरपा स फाटै है छाती
 बा सुल या खुल या ले चीणा बाध बा जेज करो ना घर छाती
 खा मलक मलक लून्वी रोटा, पी पाणी ले सोवै शाती

धरती रा लाल निलखता नै लालायित दाणा रै खोतर
 जद देखू अग उघाडा ने मेखलियो आडणियो नातर
 काटा में पगा उभाणा नै ताम्बै सी सपती धरती पर
 दुख देख द्वियो रोवण लागै सुख रो सपनो जाऊ पातर

बा बाध भरोटी लकडथा री घर शाश शहर म आवै जद
 रस्तै में सहवै भूग प्वास, पण मोल। पूरो बा पावै कद
 घुनण सी काया नारी रा अपमान हुवै हो जवै हद।
 अग तोड करै मे'नत भारी, मजदूरी ओछो पावै पद

घालै चोलै में चीण डाल आख्या में ओ घालै काजल
 झुकतो भटका द माल खोस नैणा में दुख बरसै बादल
 ओ शाह बण्या डाको रालै घर नौपत बाजै है मादल
 ओ सरवर नीर भरयो दीसै पण पीणै में कडवो गादल

ओ टावर मुह फलको सो लै फलका फलका करता आवै
 लाचार चिणा री शटी नै, दोरी सोरी भी खा जावै
 होली दिवाली ओ घोके जे गुइ रो दलियो पा जावै
 करलाट करै भूवी आता आँता पर आँता बल खावै

ओ मोहन भाग मलाई नै कोइ बात बडी समझै कोनी
 पइसै नै पाणा री तरियो बहवण घो की चिन्ता कोनी

धलगोजा

म्हारे के पइसे री परवा लागै ज्यू ही लागण धोनी
के भलो काम के बुगो - काम बरतै ज्यू ही चग्तण धोनी
ठठार पड़े डाफर बाजै कप कप कर कालुजड़ो कापै
मनबूर वण्यो मजदूर कृपक बसतर विहीन तन क्या टापै
सरदी में सोइ दुखाला लै मखमली मुलायम औ नापै
वे भर भर क्या नै ओदैं दिन उग्या लागै पुन पापै

उड़ीका

निवण निवण ग्हे लाव किरोड़ा, करा माहुआ था, कर जोइ
ये थारै बाचा नै पालो भारत आया भल बहोइ
आदीला बादीला मोहण नद जसोदा रा घम्मोइ
आगा थक्का वेग पघारो आवण रा वाजणदयो पोइ
विलिया चूक्या डाव चूकसी डाण चूकसी कालग रोइ
दुरबलिया रा दोखी बोळा सोखी येही राधा जोइ
गोपाळी काळी कोष्वाळी गाजर नै ज्यू माळी तोइ
हमरत री कूपी गाथा रो दुम्टी देखै गजो मरोइ
माँ धेनु रो हेत रेत में मिलसी गोमद बेगो दौइ
रहे रुकमण थोइ घणेरु राधा नै बैकुंठा छोइ
ग्यान ध्यान री सार न जाणां आपस में लेवा विर पोइ
नै तो दूजा ग्हे दूसरा ओ के चाल्यो घर में घोइ
आपण तापण भेट माहुआ आयर आनै पाछा मोइ
ये सगरी सुणनै में आया विर क्यू ओदी मोटी सोइ

पिचारणै

फारीगर नीचै आयो 'करणी' रा खोभा दीना
बखता रा प्राण परेसु मुक्ती रा मारग लीना
हाली रे साथै मैली खोबा मे खोड़ पुगावै
आ हरखचन्द री हेली बखता री बात बतावै

श्री नानूराम संस्कर्ता

[परिचय — श्री सस्कृता प्रकृति री कोमल गोद मे किलोल करणैवाला रगीला कवि है इणा री, 'कलायण' 'दस देव' और 'समय वायरो' नाम री तीन पोश्या राजस्थानी भाषा मे जनता री जीभ माथै नू वै नखरै स नात्र घालै है । प्रकृति वखाण में तसवीर सी कोरणी और समय सारू चलणो, दो गुण इया मे पतजी हाळा सागी मिलै है । बीकानेर राज्य थका कलायण माथै इया नै पाच सौ रिपिया मिल्या हा । हिन्दी में श्री मैथलीशरण जी रो 'जयद्रथ वध' नै श्री रामनरेश जी रा 'स्वप्न, पथिक, मिलन' जिसा रड काव्या री तिरिया इणारै 'यटोही' करण काव्य मे भव्य भावुकता तथा विमल व्यक्तित्व सामो दीलै है । कवि री भलै ही केई पोश्या छपे विना पडी है, जकारि मुरधर रै जणै २ नै घणी उडीक लाग रयी है ।

कवि पदरै वरसा सू माध्यमिक मद्रसै मे टावर भणावण रो काम करै है । पण । मुळकतै मू डै रा सीठा बोल दुग्न पर रोवण हाळी दया और 'आप रो उजाड'र पारको सुधारण हाळी आदत देरया, आदमी श्रूजळो हुज्यारै है । छै गाव कालू रा वासी है । आपर गाव-री आसी सस्थावा मे भरपूर भाग लेवै है नै सुरसुती मिदर रा पक्का पुजारी है]

३३३, ३३३ ३३३- ३३३३
 ३३३ ३३३३३३- ३३३
 ३३ ३३३३३३- ३३३३३
 ३३३ ३३३३३३ ३३३

३३३३ ३३३ ३३ ३
 ३३३३३ ३ ३३३ ३३३ ३
 ३३३३३३ ३३३ ३३३ ३३३
 ३३३ ३३३ ३३३ ३३३ -

३ ३३ ३३३ ३३ ३३
 ३३३३३ ३ ३३३ ३३३
 ३३३ ३३३ ३ ३ ३३३
 ३३३३ ३ ३३३ ३३३ ३३३

३ ३३ ३३ ३३३ ३३३३
 ३ ३ ३३ ३ ३३३३
 ३ ३३३३ ३ ३ ३३३
 ३ ३३ ३ ३३३३३३

विजलीसी कडकी नस नस में
 घाध्या कवच उतरयो पोडी,
 हुमार बम्म बम्म महादेव
 ठक्ठक्ठक्ठवक वढी घोडी,

पेला राणी ने हरस हुयो
 पण फेर जान सी निकल गई,
 कालजो मुँह कानी आयो
 डब डब आगडिया पथर गई,

घायल सी भागी मैला में
 फिर बाच भरोला टिक्या नैण,
 बारें दरवाजै चूढायत
 उच्चार रयो थो घीर धैण,

नैणा सू नैण मिल्या क्षिण में
 सरदार चीरता विसराई,
 सनक नै भेज रावल में
 अ तिम सैनाणी मगवाई;

सेवक पहुच्यो अतपुर में
 राणी सू मागी सैनाणी,
 राणी सहमी फिर गर्ज उठी
 धोली-कह दे मरगी राणी,
 फिर कह्यो-ठैर लै सैनाणी
 कह भपट लड़ग लीच्यो भारी,
 सिर कट्यो हाथ में उच्चल पड्यो
 सेवक भाग्यो लै सैनाणी,

[परिचय — श्री सस्कृता प्रकृति री कोमल गोद मे किलोल करणैवाला रगीला कवि है इणा री, 'कलायण' 'दस देव' और 'समय वायरो' नाम री तीन पोश्या राजस्थानी भाषा मे जनता री जीभ माथै नू नै नखरै स नाच घालै है । प्रकृति वखाण में तसधीर सी कोरणी और समय सारु चालणो, दो गुण इया मे पतजी हाळा सागी मिलै है । जोरानेर राज्य थका कळायण, माथै इया नै पाच सौ रिपिया मिल्या हा । हिन्दी में श्री मैथलीशरण जी रो 'जयद्रथ वध' नै श्री रामनरेश जी रा 'स्वप्न, पथिक, मिलन' जिस्त रूढ काव्या री तिरिया इणार 'बटोही' करुण काव्य मे भव्य भावुकता तथा विमल व्यक्तित्व सामो दीलै है । कवि री भलै ही केई पोश्या छुपे विना पडी है, जका री मुरधर रै जणै २ नै घणी उडीक लाग रयी है ।

कवि पदरै वरसा सू माध्यमिक मद्रसै मे टावर भणावण रो काम करै है । पण । मुळकतै मू डै रा मीठा धोल दुग्ध पर रोवण हाळी इया और 'आप रो उनाड'र पारको सुधारण हाळी आदत देरया, आदमी श्रूजळो हुज्यारै है । छै गाव कालू रा वासी है । आपर गाव री आसी सस्थाना मे भरपूर भाग लेवै है नै सुरसुती मिदर रा पक्का पुषारी है]

वखतांनी वात

आ हरखचद री हेली वखतांनी वात वतावे
 हो वरसण रो बंद मौको पण काळा घग न आई
 बाजरी पीळी पडगी कल री ना छा' गिराई
 से दूम अढायो मेजो बंद हरखूरकम चुकावे
 आ हरखचद री हेली वखतांनी वात वतावे
 वखतांनी ना हा टावर छा माग नारळी ल्यावे
 मोठा रो मुष्टी आटो मावडती पैठ शिवावे
 बालकिया हाडा लेली मा भूली चेजे जावे
 आ हरखचद-री हेली वखतांनी वात वतावे
 कारीगर श्रुभो कापे मजदूर मडा आवे
 बंद भूल भूल नै पखता मोठाका वटुल टावे
 चूनो सा चढे शकेली ऊर्ची श्रुई पर जावे
 आ हरखचद री हला वखतांनी वात वतावे
 यू डरता चूनो दावे ना कामण चेते आवे
 चट गट गट चढे निसरणी भूली नै चककर आवे
 बंद काल वणे हे बेली दुसिया-रो दुख मियावे
 आ हरखचद री हेली वखतांनी वात वतावे
 ऊचे-सू नाचे रोटी बंद हरखचंद खुद दीठी
 अण गाल निकाळी मारी अण मरी जान नै मारी
 कै: मुपत री भावे मेला अण हूँता तैनर आवे
 आ हरखचद री हेली वखतांनी वात वतावे
 कारीगर नाचे आया 'करणी-रा खोभा दीना

निन्याख्ये

वपता-रा प्राण पखेरू मुकनी र मारग लीना
 हाळी रे खाधे मेली खोडा में खोड पुगावे
 आ हरखचद री हेली वपता-री वात वतावे
 कागल में फाग स्याळिया गिरभा काया-ने चोरै
 सूका ओभर आतडिया चूधा रा हरजस गोरै
 घर टाबर बोवै गेली म्हारी माळ रुद आवे
 आ हरखचद री हेली वखता री वात वतावे
 भूखा तिसा सो रेवै मायू-नी आसा माये
 पण । आझ अणमणा दीजे, पड रेत रात रे साथे
 दिनु मे जावै हेली जद हरखू कद डयवै
 आ हरखचद रा हेनी वखता री वात वतावै
 वपता री हुई मुणाई घण-रूप काल वण आयो
 पायी वेहद वरसाओ धनपत रा कुटुम्ब जुवायो
 हस पद दहादह हेली हरखू नै हाय दिखावे
 आ हरखचद-री हेली वखता-री वात वतावै

दीन किसान

कैई मौजा माये जोर
 कैई दोजल भोगे जोर

चिलमिल चोरं लूवा चालै
 चू चाही-सी लागे लाय
 उजालो आग वरसावे

तातो पाणी, भ्नीषी छात्र
 बूजा खोदें धरा सुधार
 मद पीवै मालक बरण श्रौर
 कैई मोजा-माणै जोर

चौमासे रा भ्नी लगे पडी
 हलियो बैता पडगी रात
 विना मटैया भाजै राखू
 श्राटा श्रगनी नीरो गात
 कास मगरा हाली बैल
 भूखा दीन, नाथ-रा चोर
 कैई मोजा-माणै जोर

खुरी डर लारा झुरकाश
 जाली श्रौर भरोखा सान
 टावर धूङ्ग श्राखरी राह या
 भेलो करियो नवला नाज
 करसा कोवङ्ग-श्रावङ्ग माथ
 धनपत गृद्ध मचावै सोर
 कैई मोजा-माणै जोर

धाम करै उघाडी कय्या
 बली चामडी माछर खाय
 प्राण मिला रेत में देवै
 हरिया खेत देख हरखाय
 ना जाणै निर्दया-री घात
 घोर ब्याज बघावै चोर

कैई मोजा-माणै जोर
 कैई दोजर भोगै घोर

सौने चादी रा टुकड़ा पर भाटे रा भगवान रीकै ह
मिन्दर री बळ्ती भट्या मे भूरै नर रो खून सीजै ह
महला मे दारुड़ी भभकै भूवा रोचै रोटी रोटी
कुण जाएँ कद सुख सू रहसा कद जासी आ बेला खोटी

श्री त्रिलोक शर्मा

[परिचय—इं'गरगढ़ वासी श्री त्रिलोक शर्मा राजस्थानी में नवै जुग री नुई कविता लिखण अगली उठतोड़ो कवि है । इण री कवितावा में साम्यवाद रो सोवणो सुर गूज रयो है । भी शर्मा आपरी कल्पना नै चोखी भासा मे बावणै री बराबर चेस्टा राखै है । राजस्थानी कविता कवि सू मोफ्ठी आसा राखै है ।

उगतो सूरज

कुरभां रो रो रात त्रिताई, अम्बर रा तारा भूढ पङ्ग्या
काळी पीळी आधी आई, रुखा रा पचा सै भङ्ग्या
आभो थर थर वापण लाग्यो, कड पड करती बिजळी कडकी
व्यागं खानी मच्यो अघेरो, वसुधरा री छाती घडकी
पापी बैठ्या मौज करै हे, धरती धूजे भारा मरती
गली गली में फलै भेडिया, भेडा चालै डरती डरती
सोनै चादी रै टुकडा पर, भाटै रा भगवान री भै हे
मिन्दर री व ती भट्या में भूखै नर रो खून सीजे हे

(२)

भगवा पहर्या राख रमाया, जोगा बण जग नै टग खावै
और गरीबा रो शोषण कर, चिलमा पीपी दम्म लगावै
महला में दारुडी भभकै, भूखा रोवै, रोटी रोटी
कुण जायै कद सुख सू रहसा, कद जासी 'आ बोल खोटी
जीयै री सामा घटगी हे, भूखी जनता हे अरडाई
मिनख करै आपस में बाता, ईसी टेम भळै मत आई

(३)

पण पूरव खानी ये देखो, बो ऊगे सूरज लाल लाल
सोनै री किरणा फूट रही, पाप्या पर भूवै आज काळ
धरती रा भूखा बेटा अन्न, अगडाई लेकर जाग रह्या हे
भोळी भगडा आज उठा, धरती रा बेरी भाग रह्या हे
सुख छ भळै मजूरी रहसी, कुण तडपैली भूखा मरती
दळ सै इतियो किरणाय मुळुळ बो कसो हरी भरी धरती

एक सो चार

चेतो कर कर चाल जवानी

चेता री छाती पर सींच्यो, खून पधीनो हल नै जोत
काल पड्यो पछतावे दुनिया, मिनख मरै ग डक री मौत
काम मिलै नही कोही रो रे, जुल्म करै शासन दिन दिन
भूखा माणस सिंसक्या नाखै, रात बितै तारा गिन गिन
कंगालां नै किचर किचर कर, महल मालिया हसता जावै
रुलै मानखो ठोकर खातो इज्जत वेचै माण घटावै
चेतो कर कर चाल जवानी, मैं तनै आज चेताऊं
अरे उलट दै जुलमी शासन, साची बात बताऊं

(२)

रोषै सू कद कष्ट कटैलो, न मिलसी तावण टुकडो
हाथ जोड कर सीस फुकाया, कुण सुणसी थारो दुग्वडो
मानवता री लाशा माथै, चढ्या निशाचर मुलकै
इज्जत छुटती देख जगत री, आमो आखू दलकै
छिण में काळो छिण में धोलो रूप जामनो बहलै
रास रग में डूब्या शासक, क्यू जनता री सुध लै
आभै उडतो पछी बोल्या, सुण तत्रै गीत सुणाऊ
अरे । उलट दै जुलमी शासन साची बात बताऊ

(३)

एक नयो ससर बघावण, बढती चाल जवानी
बो मुरदा में प्राण फूकटै गा तू राग सुरानी
हाथां बिच में शस्त्र पकडकर, बड नै चेतन कर दे
भूखा नगा भिलमगा में, आज बगावत मर दै

एक सौ पाच

अलगोजो

तू माता रो साचो वेदो, जीत घरा जन् आसी
पुलक उठेली घरती माता गीत विजय रा गासी
जाग जवानी से अगडाई, में तन्नै खडो रिभाऊ
अरे उलट दे जुलमी शासन साची बात बताऊ

(४)

बीत गई सो बीत गई, तू अन्न मत चिंता कर रे
ग्राज मौत सू लड्डणो पडसी, जान हथेली घर रे
रणचण्डा हुकार करै तू रिपु रो खून बहाई
माथ कटाकर मर जाइ पण मा री लाज बचाई
कगाला री ताकत लाख बैरी रो सिर चक्रावै
थारी इज्जत तू रातैला, तूजो राख न पावै
चेतो कर कर चाल जवानी में तन्नै ग्राज चेताऊ
अरे उलट दे जुलमी शासन, साची बात बताऊ

पवि थारी सरण जगन रा जीव बिस्वायत
राज कोप रै बाज मो धण विरह सतावत
लेजा मूझ सदेस यज्ञ री अलका नगरी
चढती भोल सीस चानणी महला बिस्वरी

श्री नारायण सिंह भाटी

परिचय—कुँ नारायण सिंह भाटी जोधपुर रा अक आला प्रतिभा आली कवि है । श्री भाटी अपार महाकवि कालिदास री अमर रचना मेघदूत रो अनुवाद राजस्थानी भाषा मे कियो है, जको पोथी रै रूप मे छप चुक्यो है ।

कवि राजस्थानी भाषा मे मेघदूत से अनुवाद इसो सान्तरो कियो है के हिन्दी रा कई विद्वान नै कई साहित्यिक पत्र उणरी मोकनी मोकली प्रशसा करी है । मौलिक रचना लिखणै सू अनुवाद करणे घणो दोरो है पण ओ कवि आपरै काम मे पूरो सफल हयो है । इत्ती आपती रचना राजस्थानी साहित्य मे देखै रै कारण कवि बधाई रो पात्र है ।

मेघदूत

पद्मो चाकरो चूक धर्या जद घणो रिसायो
भुरती कामण छोड रामगिरि यक्ष सिधायो
जनक सुता रै स्नान जेथ रो निरमळ पाण्यो
गहरी बिरछा छाड काय न कदै बग्वाण्यो

(२)

उण परबत पर केक बिताया दिवाडा दोरा
ढळियो भुजबन्द हाथ रूप रग पडिया पारा
देख्या लगत असाढ सिम्बर स बादळ जुडिया
बायौ गज मतवाळ खेलता भाखर भिडिया

(३)

देखण लागो यक्ष आवडी आस भरिया
चोते मन कुरळाय आज आ किसडी विळिया
निरळ्या छोडा मेघ सजागी चचळ होवै
घारा काई हवाल कामण्यो कठ न होवै

४)

ढळता मास असाढ अजूण्यो-सावण सभियो
घण जीवण रै लोभ यक्ष रो हिवडा भरियो
मेलण मेघ सदेस मोद मन में भर लीनो
फूल चमेली चाढ मेघ रो स्वागत कीनो

(५)

कठे अगन, जळ, पवन, धुवै रो मेघ अ देसो
कठेक पाटक पुरल लिजावण भोग सदेसो

एक सौ नौ

भूल्यो इतरा मेद वीणती मेघ करंता
न चेन अचेतण ग्यान काम कवाण चदतां

(६)

पुस्कर आवरुतक मेवा रो वस निभावै
धारै मनरा भेव राज रो दूत कहवै
करू वीणती घण बाहुता भाग हियैरो
भळ मोटा नट जाय नीच रो 'हा' न भलै रो

(७)

पावै थारी सरण जगत रा जीव बिखायत
राज कोप रै कान मो घण विरह सतावत
लेजा मूक्त सदेस यत्त री अनका नगरी
चदती भोळै सीस चानणी महला बिखरी

(८)

जावतदा असमान कथ री आसा करती
पेखै निराठ रिगहणिया मुख केस सवरती
बिसरावै घुण कथ कामणी मेघ निरपता
जिकोन परबस शाय अमीणी ओळ बिलखतो

(९)

पडै न पथ में तिघन बिलखती माभी मिलसी
गिणती दुख रा दिवस जीव रै जनता घुळती
कथळीं हियो कुसम विजोगण प्रीत भरीजै
मिलख आसरो त्रेक जिकण मेंभलो पतीजै

(१०)

साथै मुधगे पन्न बढ़ता मन बिलमावै
बाधा चाकत बाल सुरगा मोह जतावै

गरभोजय असमान बुगनिया मिळवा आई
इदका हुआ सुगन लेपता मेघ विदाई

(११)

सुणता मुखरी गाज तणीजै नाग छतरियां
सुणता सागै घोक हसरी डहै पगतिया
कंबल नाल ले भग पयाणी पाचासर नै
बरसी धारो साथ सातरी डारा करने

(१२)

त्रिभूट सो मैय राम रै चरण रमायो
होता था स मेळ नैय स नीर बहायो
इती प्रीत री रीत मिलण रो माद बघायो
ले लो सैणा सोम्य सुरगा मेघ सिधावो

अलगोजो

भूल्यो इतरा भेद वीण्णती मेघ करता
न चेन अचेतण ग्यान काम कवाण चटता

(६)

पुस्कर श्रावस्तक मेघा रो घस निभावै
धारै मनरा भेव राज रो दूत कहावै
करू वीण्णती धण बाळुता भाग हियैरो
भळ मोटो नट जायनीच रो 'हा' न भलै रो

(७)

पावै थारी सरण जगत रा जीव बिखायत
राज कोप रै काज मो धण विरह सतावत
लेजा मूझ सदेस यत्त री अनका नगरी
चटती भोळै सोस चानणी महला बिखरी

(८)

जाघतदा असमान कथ री आसा करती
पेखै निराठ निग्दणिया मुख केस सवरती
बिसरावै कुण कथ कामणी मेघ निरगतो
जिको न परन्नस होय अमीणी ओळ बिलखतो

(९)

पडै न पथ में विघन बिलखती भाभी मिलसी
गिण्णती दुख रा दिवस जाव रै जनता घुळतो
कवळो दिया कुसम विजोगण प्रीत भरीजै
मिल्लण आसरो अ्रेक निक्कण मेंभलो पतीजै

(१०)

साथै सुघरो पवन बहता मन बिलमावै
डाषा चाकत बाल सुरगा मोह जतावै

एक सो दस

गरभीजण असमान बुगनिया मिळता आई
इदका हुआ सुगन लेपता मेघ विदाई

(११)

सुपता सुषरो गात्र तशीजै नाग छतरियां
सुपता सागै घोक्र इसरी ढट्टै पगतिया
कंवल नाल ले मग पयाणा पाबासर नै
करसो यारो साय सातरी दार करनै

(१२)

चित्रकूट सो सैण गम रै चरण गमायो
होता या सु मेळ नैण सु नीर बहायो -----
इती प्रीत री रीत मिलण रो माद बपायो
ले ला सैणा सग सुगा मेघ सिधावा

कुण जाणै, कद आसी काल -
दो दाणा पर, बिल्लसी जाल
मधु आवै, फूला मै खेल
लूआ रा लपका भी मैज
अणचाया सापा नै पाल
कुण, जाणै कद आसी काल

श्री . .

[परिचय—श्री रतनलाल दाधीच हिन्दी नै राजस्थानी भाषा रे माय लिखणिया कार्य नै लेखक है । जिका री कविता नै कहानी भाषा री बाढ़ में लथपथ पड़ी है । 'साड़ी के छोर' नाम सँ एक कहानी सप्तद हाल ही छप'र आबो है जिको हिन्दी भाषा रे मायने है । अवार श्री दाधीच श्री सार्दूल सस्कृत कालेज में पढावण रो काम कर रया है ।

कुण जाणै, कद आसी काल
दो दाणा पर, त्रिहसी जाल
मधु आवै, फूला मै खेल
लूआ रा लपना भी भेज
अणचाया सापा नै पाल
कुण, जाणै कद आसी काल

श्री रतनलाल दाधीच

[परिचय—श्री रत्नलाल दाधीच हिन्दी नै राजस्थानी भाषा रे माय लिखलिया कवि नै लेखक है । जिका री कविता नै कहानी भाषा री ढाढ़ में लथपथ पढी है । 'साङ्गी के छोर' नाम सँ एक कहानी सभइ हाल ही छपर आयो है जिको हिन्दी भाषा रे मायने है । अवार श्री दाधीच श्री सार्दूल सस्कृत फालेज में पढायण रो काम कर रया है ।

आ नैयाँ री • ।

आ नैयाँ री प्यास कदी ना बुझये पासी ।

समन्तर री छाती पर उठती भ्राक्या देखी

फूला मै मैठी तितल्या री पाख्या देखी ।

आमै म सूती बिजली री आरया देखी । ।

प्यास बुझाये आली सारी सारया देखी ॥

पण, गहगे ग्री घाँव कदी ना मरये पासी

मस्त बायरो आजावे देलाया भोली

कोयलकी जद आल मीच हो जाँव बोली ।

गाती गाती सुजावे फूला री टोली

नई नई सी याद, पाइकर जूनी चोली—

कोया नीचे अणजाणी आ लुलु भासी

सीधो सीधो चाल

परजी, सीधो सीधो चाल

मिट्या न, मिटसी काला लेल

कुण तोड़ी होतव री रेल

नीचे सू ऊपरता देग

टरकाल छेदाँ मै मेग

दियडे ने चेतें सू माल

पक सी पपदे

सीधो सीधो चाल

कुण जाणै फद आसी, काल
दो दाया पर बिछसी जाल
मधु आवै, फूला में खेल
लूआ रा लपका भी भेल

अबचाया सापा नै पाल

बावलिया, बडले री छाव
सूतो है, पैलाया पाव
लगा रह्यो, जीवख रा दाव
पण, ना जायी काली भाव

डूँगर रै नीचे री ढाल

बाँध बाँध करतव री सीव
घरती री हालै है नीव
काल भूँपड़ो पडग्यो, देख
आज धूँजतो मिदर देख

उलहाया बडा बडा रा पाल

साजन खोल !

साजन खोल किवाड

अग्गर ' होग्यो लाल
कलायण ' ल्यायो

एक सी पनरै

अलंगोजी :

दात भौच विजली कडकई

फाया सू गरजन लपटायो ।

। मरती मरती

। आसू भरती

साजन खोल किवाइ

किचा अठे बणाया पिजडा

राखी न थाडी चूक

पछी आयो, उडग्यो पाछो^२

बोल्पो न चाल्यो, मूक

लिया सदेस ।

पो क^२ देस

साजन खोल किवाइ

अगम पंथ जोया हिषडै सू

। भली मिलानै भीत

पलका मै सोया रातीदा

ले भिरहाणै भीत

कोया फेर

थोडी देर

साजन खोल किवाइ

घडा डाल सीब्यो तरवर न

कालो पढग्यो देख

सूता सूता रात गुजरगी

मिट्या माल रा लेख

मेंदरा मेंदरा

रोया घोयौ

साजन खोल किवाइ

एक सी सोलै

जलजलो जेला सकै पण चानणो दिव रो
 ऊभ विरहण व्यु- गिणै वयू आवणो पिव रो
 बण न भोपो धात्रला भगवान बण कर जी
 तू ली भलाई ओक दिन पण सिनस बण कर जी

श्री श्रीमन्त कुमार व्यास

[परिचय— श्री श्रीमदकुमार व्यास राजस्थानी भाषा
 रा एक प्रतिभाशाली कवि है जिका री कवितावा में जोश उफर
 रयो है । 'इन्किलाव सो आसी रे' नाव री कविता मे इन्किलाव रो
 सुर है । 'ओल्यूड़ी' माय हिचक्या लवालव होय'र वारें दुल दुल
 पड़ रयी है ।

श्रेष्ठ टैम 'पवनपुत्र' नाम सू एक प्रबन्ध काव्य राजस्थानी
 भाषा रे माय लिखण मे लाग रया है । आरो एकाकी नाटक रो
 सग्रह हाल ही कागरेस गाव माय बड़गी' नाव सू छप'र आयो
 है जिको राजस्थानी भाषा नै नुई देण है । समाज री सड़ी गली,
 बोदी रीत्या नै भटकै सू तोड़ र नयै रूप में खड़ो करणै रे प्रयास
 नै सही रूप देणै रे सामै सफलता हाथ जोड़'र खड़ी दीख पड़-
 रयी है । समाज रे मायें ऊपर कलक रा टीको पर्दाबधा नै
 मेटण री शुरूआत श्री व्यास आपरे घरा सू करी है । समाज
 रो घोर विरोध होता थका भी श्री व्यास लाडणू नगरपालिका
 री सदस्या आपरी पत्नी श्रीमती शास्ता व्यास नै पर्दे मायलै घोर
 अघारै सू काड़'र छी जाति मे जागणै रो जोश भर दियो है ।

आप एक आछो कामे सी कार्यकर्ता है साथ ही नुई दग
 री बालशिक्षा सू भी मोकनो प्रेम राखे है । आप लाडणू रा
 दाधीच ब्राह्मण ५० नानूरामजी व्यास रा सुपुत्र है । राजस्थानी
 साहित्य नै आप सू घणी घणी आसावा है ।]

राखी

भाय्य भलाई बांध राखड़ी
म्हार तो खुजा खाली है
हियो बढाई बटै बावली
तू रखड़ी बाधण चाली है

मैं दा दिन सू भूखा बैठ्यो
रावण आगळ टुकड़ो कोनी
लीगम लीरा हुया बपडिया
ता दकधा भी चिथड़ा कोनी

फिरता फिरता एह्या बिसगी
श्रौर पगा में पड़ग्यो पायी
पण जग री श्रे पापी धारया
कदे न बाची म्हारो काणी

आमे पर सू तारा कूके
घरती री छाती फाळी है
भाय्य भलाई बांध राखड़ी
म्हार तो खुजा खाली है

मैं रोवू पण श्रे रुकै नहीं
माइयाणी आँसुड़ा टळकै
मैं चोख पण श्रे चूसै नहीं
कोयां में मोतीड़ा पळकै

एक सौ सगणीस

अलगोजो

बद ग्हाड़े हिव में दुखड़े रा
बे काळा पीळा लोर उठे
बैरण आ काळी रातफली
बद जाय कटे ना भोर हुवे

में खाय पछाटा पट्टू, सट्टू
कुण भूमै राम इलाच्छी है
भाण भलाई बांध रातफली
ग्हारा तो खूजा खाली है

मागी थारो बात थ बेनइ
इण रणइ में प्यार भरपा है
इण जे तार तार में थारे
रोम रोम रा खार भरपा है

इण रे लाल रंग में थारे
दिल रो लारी उमइ रवो है
बोल बोल पायलफली मीरा
बाग पांगडो' रणइ रवो है

कट्टे दिल रो बात बापच्छी
इगे चाट निर रातफली है
भाण मण्डे बांध रातफली
ग्हारा तो खूजा खाली है

मे भूयो हू मे संभा हू
पण मनो दाद तियडंभा

पक मी बांग

माता रै दूधे री खोगन
में कदे न पाव हटाऊला

तू स्नेह टाळ बेना हण में
दे बाध प्रेम तू राखइली
में मुळक मरु थारे खातर
भळ फूल समझ मळ पालइली

थारा हण होरा में पगली
में जीवण रिच्छा पाली है
भाण भलाई बाध राखइली
भारा तो खुजा खाली है

गीत

तू भी भलाई एक दिन पण मिनल बण कर जी
हव हवा ज्यावे, हुवे-
गलगल, द्विये री पीड सु
चौसरा चाले, लुवे
टप टप, समै री भीड ध
बण न हसको, कालजो निरसाण रो बण जी
तू भी भलाई एक दिन, पण मिनल बण कर जी
बद सुणवै घूषरा
छम छम सुखा री रात में

गीत गावै रोवणा

चातरु खडना बरसात में

बण न कालो बादलो, घरकाट बण कर जी
 तू जी भलाई एक दिन, पण मिनरु बण पर जी
 बलु बली जे ला सकै
 बण चाणो दिव रो
 ऊम विरदण ब्यू गियै
 ब्यू आवणो विष रा

बण न भोजे भावला, भग्यारु बण कर जी
 तू जी भलाई एक दिन, पण मिनरु बण पर जी

ओल्हूडी

ब्यू संल निपा पलाइ, बैण ओल्हूडी आई
 तू बवली नूपल तू भी, दिवना रे ठाये आवे
 आ द्विण द्विण में छोला तू दिवरो गल गल कर आवे
 बिय बादल भी सोइया में मिनरु खोला छे लाये
 में ब्यू रोवु माहाली, तू यर पदेगी लाये
 दिवले में तैल गकरु आ उगरी जत मुमाइ
 ब्यू हीन निपा वेलाई बैण ओल्हूडी आई
 धरी पदचरु गूई रुना ग माय बर्तये
 मुनि करु मरु माया में पड गी, मिनरे, दीजे
 गर्भाजी भोज भोज पुंई घद पनका भजे
 निरुणा री ला बेनी के पला री दिव पण मे

झुक जावै ह्रगर हेटो, मिट जावै सा फरडाई
 क्यू सीख लिया पलाइ-बैरण ओल्यू डी आई
 बिल्लिया री छमछम छम छम कद पाछी मोड सकैला
 सावण भादू री भिरमिर कद मारग रोक सकैला
 पण जे तू आई लेकर भूरा, नागा, दुखियाग
 बा रैं अघरा स सुणिया जे इक्लिब रा नारा
 ता पग पाछा आवैला भल भल अखिया बबलाई
 क्यू सीख लिया पेलाइ बैरण ओल्यू डी आई

चकवो-चकवी

श्रेक रम री एक डाल पर
 दोय पखेरु बैठ्या रोळै
 अलगी अलगी चूच आपरी
 कद के दोनू घयो धिगणी
 कद के दोनू
 श्रेक साथ हो दिन भर खेलै
 चुगो चुगो, रमै, रम रम
 प्यार करै, पुचकरै
 जाये सदा मु गो दिनहो रहती
 सूरज इबछल कदे न दलसी
 पेडा सपना साच हुवे कद
 सोर भळै बरघात बणे कद
 सो भी रलमिल दोन्यू नाचे

अलगो जो

पाल देखे प्यार करे पुचका
छोला चढे, किलोला करे
चूच सू आपमरी में
भूल जगावे
प्यास जगावे
काम जगावे
दिव में हारया पदथ हुआ
अरमाण जगावे
पण बैरण सभया आजावे
मनड़े री मन में रह जावे
सूज दलै भलै अबर सू
चाद चढे इमरत बरसावे
तारा छाई रात हुवै जद
मघरी मघरी पून चलै
उण खनलै नीम परा बैठ्या
दिन भर रा अलगा रेवणिया
बे मार मोरनी, चिड़ा चिड़ी
भेला होग्या बण भिड़ी भिड़ी
उण टैम बापड़ा
दोय जिनावर
आणै सतजुग, चोता, द्रापर
दलजुग रो भेलो हो यावर
पद्मयो इण जोड़े रे माथे
चावे, पण रह सदे न बापड़ा
रात्यू साथे

एक सी बीईस

मीरा री केवत साची है
 घायल री गत घायण जाखे
 छेडो घायल कुण
 के श्रारी पीड पिड्यायै
 घोटर लिस्ट में नाउ
 हयां रो दिख्यो वायनी
 जणा भला चमगू गा फोनी ने'रुजी
 बिया मतलब श्रारी बाता ताणै
 बीठ मायने जदी 'रमण'
 कचन रो थोडो रचमान
 भक्तको दिखला दयै
 बिडला जी कटकै
 जिया चील सिधरै नै भूपटै
 और करोडा रापिया पटके
 जाच करावै
 विज्ञान जाणिया नै लगवा कर
 आ रा सगला हाल दितावे
 पण श्रे पापी
 ओक रुख री एक डाल पर
 बैठ रात में अलगा अलगा
 कह चकवो
 कह चकवी
 कह तू बात
 कटे ज्यू रात

इन्किलाव तो आसी रे

चोटी आळो ताग उगिगे, धरती हुइ उदासी रे।

समदर उप ↓ इबाला रावे, ई वलाव तो आसी रे॥

मिंदरिये में वलो घोया, जगमग जगमग बातो रे,

सास छाक्री बळा जिरडा, कुण छेई परमाती रे,

फाली मोली रात अचेरी, क्यू कागी कुल्लाती रे,

धरती अम्बर सामो जाव, लिल लिल भेजी पाती रे,

कै दे मोनी गगन जीचलो, कै दे जीवत पासी रे ॥ सम०॥

इ गर धूजे थरहर थरहर, लोही री बरसे बदला,

लाय लागगा च्यारू पाना, ऐकी कुण होली मगली,

मिनव जमारो बणता जावे, यू ज्यू माटा री टगली,

मागण बण डसवा नै चाली, आज हवाया ए सगली,

धरमी पार उतरसी पछी, पापी गोता खाती रे ॥ सम०॥

कौडी सट्टे क्लै मानवो, खारा लागे अणखावण,

श्रीर लडै आपस में सगला, धोल रटोना बतळावण,

इ नै माये बैठ टांगरी करसे री, कर करडावण,

चौबा चटिये ठाकर रे, हिये लगा देवे जावण

दा पाय रे नीच पासीजी, इमें न टोशा सहसी रे ॥ सम०॥

इन्किलाव नै लावण पातर, लाखा खून बहाया हो,

कमतारिये करसे रे ताइ, ताज जंत कर भायो हो,

चीर बालुजो आजादी रो पौधा नयो उगायो हो,

पण बैरी कर सक्योन रिच्छा, डागर खेत चययो हो,

माखण माल मसपरा चरग्या टुक्का मलिया बासी रे, ॥ सम०॥

चेत मानाया चेत चेत दू, इतिपाव ले द्या ऐरो,
 नाव जले घारो बद फेर, गाटा मे भागा केदो,
 फिनरकिचर पय्य घारा रो दू, दग गुद नेका नेदो,
 हरधै करवा मुळवे मगूर वू इतिपाव ले द्या ऐका,
 सेवा र पय घाचो कादं मरदे शाग उपासी रे ॥ सम०॥

टमरक दू

टमरक दू ! टमरक दू !
 एक कमेडी,
 बैठ खेजडी,
 मिश्री घोली सुव सुर सू,
 टमरक दू ! टमरक दू !
 खनी रोही
 जागी छोई,
 पाछी बोली यूँ री यूँ,
 टमरक दू ! टमरक दू !
 बोल प्रजाय्यो
 में के जाय्यो !
 हुई गिद गिदी धरै क्यूँ !
 टमरक दू ! टमरक दू !

अलगोजो

कमतर रो साथी अलगोजो
करसै रो साथी अलगोजो

ओ मन री मोजा साथ करे
बुल काना बाती अलगोजो ।

सुण ह्य री राग कमेडी रा
अनमोल गटर गूँ थम जावै,
सुण ह्य री राग चिङ्गल्या री-
चोकेगी चूँ चूँ दब जावै,

ओ गूँज पुगा टै मरवण
दोलै री पाती अलगोजो !

बो मीकर मधरो हिद भीरणू
जद बवै बायरो मद भीरणू,
ओ बाजै, धरती आभै रो
दै भेल अगूणू आथूँणू,

ओ हेतइलै री लेर उठा
भर देवै छाता अलगोजो ।

जद हुनै जेठ रा दिन टण्ण
जद भर्या भादवो घहरावै
जद खलो नीगलै काना में
जद चैत चानणी टिकवै

ओ एक सरीसो सह रत में
सगला रो साथी अलगोजो ।

सपनों रो साथी अलगोजो ।
सुख दुख री साथी अलगोजो ।

एक गो अठारहम

